॥ ओ३म् ॥

"सरल-संस्कृत पाठमाला"

❖ लेखक ❖

डॉ. सोमदेव शास्त्री

❖ प्रकाशक ❖

प्रणव प्रकाशन

३०९, मिल्टन अपार्टमेन्ट्स

जुहू, कोलिवाड़ा, मुम्बई - ४०० ०४९.

प्रथम संस्करण

१००० प्रति

मूल्य : ४० रुपये

प्राप्ति स्थान :

डॉ. सोमदेव शास्त्री
३०९, मिल्टन अपार्टमेन्ट्स
जुहू कोलिवाड़ा, मुम्बई - ४९.
०९८६९६६८१३०

आर्य समाज सान्ताक्रुज
वेठ्ठलभाई पटेल मार्ग,
ान्ताक्रुज (प.), मुम्बई - ५४.

प्रथम संस्करण - १००० प्रति
विक्रम संवत् २०६५
ईसवी सन् २००८
मूल्य - ४० रुपये

मुद्रक :
निराला मुद्रक
१४०, सानेगुरुजी मार्ग,
मुम्बई - ४०० ०११.

प्राक्कथन

वेद-उपवेद-ब्राह्मण ग्रन्थ-आरण्यक-उपनिषद्-दर्शन शास्त्र, वेदांग (शिक्षा-व्याकरण-निरुक्त छन्द-ज्योतिष-कल्प) गीता-रामायण-महाभारत-मनुस्मृति-पुराण-उपपुराण आदि सभी ग्रन्थ संस्कृत भाषा में विद्यमान है। भारत वर्ष की प्राचीन सामाजिक राजनैतिक-धार्मिक व्यवस्था संस्कृत साहित्य में विद्यमान है। रामायण और महाभारत काल में संस्कृत जनभाषा थी। हनुमानजी का परिचय देते हुए श्रीराम लक्ष्मण से कहते हैं कि ये संस्कृत व्याकरण के बहुत बड़े पण्डित हैं जो इतनी देर तक बातचीत करते रहें किन्तु इन्होंने एक भी शब्द अशुद्ध नहीं बोला **(नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेनाधीतं बहुव्याहरताऽपि न किञ्चिदपभाषितम्)** इतना ही नहीं अपितु राजा भोज के समय (पन्द्रह सौ वर्ष पहले) भी सामान्य व्यक्ति भी संस्कृत बोलता था। राजा भोज के विषय में प्रसिद्ध है कि उन्होंने लकड़हारे (लकड़ी काटकर बेचनेवाले व्यक्ति) से संस्कृत में पूछते हुए अशुद्ध शब्द बोल दिया जिसको सुनकर लकड़हारे ने दुःख व्यक्त करते हुए कहा था कि अशुद्ध शब्द (बाधति) को सुनकर मुझे जितना कष्ट हो रहा है उतना इन लकड़ियों के बोझे (वजन) से कष्ट नहीं हो रहा है।

स्कन्धं न बाधते राजन् यथा बाधति बाधते।

अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर राजा भोज तक हमारी भाषा संस्कृत रही है। इसी से प्राकृत पाली-हिन्दी और भारत की प्रान्तीय भाषाएँ निकली है। इसलिये सभी भाषाओं में संस्कृत के शब्द विद्यमान है।

संस्कृत की महत्ता को ध्यान में रखकर ही उल्लेख किया जाता है कि **"संस्कृतं संस्कृते मूलम्"** अर्थात् संस्कृत ही संस्कृति का मूल आधार है, **संस्कृत** भाषा के अध्ययन से **संस्कार** बनते हैं और संस्कारों (अच्छे विचार और व्यवहार) से ही हमारी **संस्कृति** सुरक्षित रहती है। इसलिये वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिये संस्कृत भाषा का अध्ययन-अध्यापन प्रचार-प्रसार आवश्यक है। हिन्दी का सामान्यज्ञान रखनेवाला व्यक्ति संस्कृत भाषा का प्रारम्भिक और आवश्यक ज्ञान प्राप्त कर सके इसी दृष्टि से इन पाठों की रचना की गयी है। इसलिये इस पाठमाला का प्रारम्भ संस्कृत वर्णमाला (अक्षर ज्ञान) से किया गया है। इसमें शब्द रूप-धातु रूप, सन्धि-समास-कारक-विभक्ति तथा कृदन्त प्रत्ययों का प्रयोग कैसे होता है यह भी

स्पष्ट किया गया है। इनमें लगभग ३५ श्लोक और वेद मन्त्रों का अर्थ संस्कृत व्याकरण से किस प्रकार किया जाता है यह भी स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। पाठमाला के अन्त (परिशिष्ट) में कुछ आवश्यक और प्रचलित शब्दों के तथा क्रियाओं के रूप लिखे हैं, प्रयोग में आनेवाले शब्दों के संस्कृत में शब्दार्थ भी लिखे हैं। संस्कृत ज्ञान के लिये यह पाठमाला ''संस्कृत में प्रवेश'' का कार्य कर सके, इस को पढ़कर और इसके पाठों का अभ्यास करके संस्कृत अन्य ग्रन्थों को पढ़ने की रूचि जागृत हो सके, संस्कृत अध्ययन अध्यापन की परम्परा सुदृढ़ हो, इसी दृष्टि से इसकी रचना की गयी है।

पूज्य स्वामी ओमानन्द जी (गुरुकुल झज्जर) स्वामी विवेकानन्दजी (प्रभात आश्रम भोला झाल-मेरठ) पूज्य पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक एवं आचार्य विजय पालजी (पाणिनि महाविद्यालय रेवली सोनीपत) आदि जनों के चरणों में बैठकर मैंने संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त किया, देववाणी संस्कृत भाषा की कुछ सेवा करने के योग्य बन सका उन सभी के प्रति में हृदय से कृतज्ञ हूँ। इस पाठमाला को प्रकाशित करने में श्रीमती अरुणा परेश भाई, श्री नरसीभाई पटेल तथा श्री धनजीभाई वालजी भाई वेलाणी संस्थापक, प्रमुख आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट रोजड़ (गुज.) सुश्री कृष्णाजी कपूर झांसी (उ.प्र.) ने आर्थिक सहयोग किया है। आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्यपालजी पथिक, श्री ओम्प्रकाशजी शुक्ल एवं श्रीमती अरुणाबेन ने मुद्रण में होनेवाली त्रुटियों की ओर ध्यान आकृष्ट करके शुद्ध संस्करण निकालने में सहयोग किया। श्री देवेश्वर शर्मा उपप्रधान आर्य समाज मुम्बई ने पुस्तक की साज-सज्जा का विशेष ध्यान रखा, इसके लिये मैं इन सभी महानुभावों का हृदय से आभारी हूँ। संस्कृतानुरागी विद्वानों से निवेदन है कि यदि अल्पज्ञतावश मुझसे कोई त्रुटि रह गयी हो मुझे क्षमा करते हुए त्रुटि (न्यूनता) से अवगत कराने की कृपा करें जिससे अगले संस्करण उसे दूर किया जा सके, इसी आशा और विश्वास के साथ....

मुम्बई
३०-३-२००८

विदुषामनुचर
- सोमदेव शास्त्री

अनुक्रमणिका

पाठ	विषय	पृष्ठ संख्या
१	परिचय - वैदिक साहित्य एवं संस्कृत वर्णमाला	१
२	परिचय - शब्द-कर्ता-एवं क्रिया (पठ् धातु वर्तमान काल) रूप-सन्धि-'म्' का अनुस्वार तथा विसर्ग का 'ओ'	५
३	पुरुष-वचन-प्रथमा विभक्ति एवं विसर्ग का 'ओ'	९
४	प्रथमा-द्वितीया विभक्ति, सन्धि-विसर्ग का लोप	१३
५	तृतीया विभक्ति, सन्धि - विसर्ग का 'र्'	१७
६	चतुर्थी विभक्ति, सन्धि - विसर्ग का श् ष् स्	२१
७	पंचमी विभक्ति पठ्धातु भविष्यत् काल, सन्धि 'न्' का 'ण्'	२४
८	षष्ठी विभक्ति स्वर सन्धि (दीर्घ-यण्) तथा क्रियाओं भेद (गण परिचय)	२८
९	सप्तमी विभक्ति - स्वर सन्धि - (गुण, वृद्धि) तथा पठ्धातु का भूतकाल (लङ्लकार)	३२
१०	सम्बोधन - स्वर सन्धि (अयादि-पूर्वरूप-प्रकृतिभाव) पठ् धातु लोट लकार	३६
११	विशेष नियम द्वितीया विभक्ति - व्यंजन (हल्) सन्धि	४०
१२	विशेष नियम तृतीया विभक्ति - व्यंजन (हल्) सन्धि 'वा' का प्रयोग नियम	४४
१३	विशेष नियम चतुर्थी विभक्ति - व्यंजन सन्धि, 'त्वा' प्रयोग	४८
१४	विशेष नियम पंचमी विभक्ति - व्यंजन सन्धि, 'तुमुन्' प्रयोग	५२
१५	विशेष नियम षष्ठी विभक्ति-विशेषण-विशेष्य प्रयोग	५७
१६	विशेष नियम सप्तमी विभक्ति - तरप्-तमप्-तव्य-अनीयर् प्रत्यय प्रयोग	६२
१७	'पठ्' धातु विधि लिङ्, क्त-क्तवतु प्रत्यय प्रयोग	६७
१८	क्रिया भेद (परस्मैपद-आत्मेनपद-उभयपद) 'सेव' (आत्मने पद) का वर्तमान-भूत-भविष्यत् क्रिया रूप (अस्मद्-युष्मद् शब्द रूप तथा) का प्रयोग नियम	७२
१९	संख्या वाचक शब्द (१ से ५०) सेव धातु लोट् तथा विधिलिङ् तथा 'तद्' का रूप	७८
२०	संख्या वाचक शब्द (५१ से १००) क्रम बोधक संख्या, समास, इदम् शब्द रूप	८२
२१	परिशिष्ट - १ विविध शब्द रूप	८८
२२	परिशिष्ट - २ विविध क्रिया रूप	९१
२३	परिशिष्ट - ३ विविध शब्दों के अर्थ	९७

अनुक्रमणिका

पाठ	श्लोक एवं मन्त्र	पृष्ठ संख्या
२	त्वमेव माता च पिता-------	७
४	विश्वानि देव----- (मन्त्र)	१४
	भोगा न भुक्ता -------	१५
५	यां मेधां देवगणाः (मन्त्र)---------	१८
	श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन -------	१९
६	परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः -------	२२
	परित्राणाय साधूनां ---	२३
७	वासांसि जीर्णानि यथा विहाय -------	२६
८	विद्या विवादाय धनं -------	२९
	हस्तस्य भूषणम् ------- नरस्याभरणम् -------	३१
९	धनानि भूमौ -------	३४
	उद्यमेन हि सिध्यन्ति ------- प्रदोषे दीपकश्चन्द्रः -------	३५
१०	आहारनिद्राभयमैथुनं -------	३७
	शैले शैले न माणिक्यं -------	३९
	उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय -------	३९
११	अर्थातुराणां भयं -------	४१
	सह नाववतु ------- (मन्त्र)	४२
१२	नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि -------	४५
	विदेशेषु धनं विद्या -------	४७
१३	श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च दृष्ट्वा -------	५०
	उष्ट्राणां विवाहेषु -------	५१
१४	निन्दन्तु नीतिनिपुणा-------	५५
	पापान्निवारयति -------	५६
१५	उद्यमः साहसं धैर्यं-------	६०
	धृतिक्षमा दमोऽस्तेयं-------	६१
१६	योऽनधीत्य द्विजो -------	६६
१७	अधीता न कला काचित् -------	६९
	दिनान्ते पिबेत्-------दृष्टिपूतं न्यसेत्-------	७१
१८	स्पृशन्नपि गजो --------	७५
१९	अनाहूतः प्रविशति-------	८०
२०	यस्य लक्ष्मीः -------	८६

पाठ - १
वैदिक साहित्य

वेद चार है - १) ऋग्वेद २) यजुर्वेद ३) सामवेद ४) अथर्ववेद

उपवेद चार है - १) आयुर्वेद २) धनुर्वेद ३) गन्धर्ववेद ४) अर्थवेद

ब्राह्मण ग्रन्थ चार है - १) ऐतरेय २) शतपथ ३) साम ब्राह्मण ४) गोपथ

दर्शन शास्त्र छः है जिनको शास्त्र या उपांग भी कहते हैं - १) न्याय २) वैशेषिक ३) सांख्य ४) योग ५) वेदान्त ६) मीमांसा

वेदांग छः है- १) शिक्षा २) व्याकरण ३) निरुक्त ४) छन्द ५) ज्योतिष ६) कल्प

उपनिषद् ग्यारह है - १) ईश २) केन ३) कठ ४) प्रश्न ५) मुण्डक ६) माण्डूक्य ७) ऐतरेय ८) तैत्तिरीय ९) छान्दोग्य १०) बृहदारण्यक ११) श्वेताश्वतर । इनके अतिरिक्त-मनुस्मृति-गीता-रामायण-महाभारतादि अनेक ग्रन्थ संस्कृत भाषा में विद्यमान हैं।

संस्कृत वर्णमाला

संस्कृत में वर्ण दो भागों में विभक्त है।

१) स्वर २) व्यंजन

१) **स्वर -** जिसके उच्चारण में किसी दूसरे वर्ण के सहयोग की आवश्यकता नहीं होती है उसे स्वर कहते हैं।

स्वर के तीन भेद है - १) ह्रस्व २) दीर्घ ३) प्लुत

१. **ह्रस्व स्वर -** अ, इ, उ, ऋ, ऌ

२. **दीर्घ स्वर -** आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ

ए, ओ, ऐ, औ - उन्हें संयुक्त स्वर या सन्ध्यक्षर या मिश्रित स्वर भी कहते हैं।

३. **प्लुत स्वर** – आ३, ई३ आदि इनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तीन गुना समय लगता है इसलिये इनके आगे ३ अंक लिखा जाता है। प्लुत स्वर का प्रयोग वेदादि शास्त्रों में होता है। जैसे (कु-कू-कू३-कु-ह्रस्व है, कू दीर्घ है, कू३-प्लुत है)

२. **व्यंजन** - जिसके उच्चारण में दूसरे वर्ण (स्वर) की आवश्यकता होती है उसे व्यंजन कहते है।
जैसे १. क्+अ=क । २. क्+आ=का

व्यंजन पांच वर्गो में विभक्त है, प्रत्येक वर्ग में पांच अक्षर है और मुख में उच्चारण के स्थान भी पांच है।

य्,र्,ल्,व् - इन वर्णों को अन्तस्थ कहते हैं क्योंकि स्वर के परिवर्तित होने पर ये बनते हैं।

ह्, श्, ष्, स् - इन वर्णों को ऊष्म कहते हैं।

क्ष्, त्र्, ज्ञ् - इन तीन वर्णो को संयुक्त व्यंजन कहते है। क्योंकि ये दो व्यंजनों से मिलकर बनते हैं जैसे :-
(१. क् + ष - क्ष। २. त् + र - त्र। ३. ज् + ञ - ज्ञ)

स्थान	स्वर	व्यंजन	अन्तस्थ	ऊष्म
कण्ठ	अ	क् ख् ग् घ् ङ्		ह्
तालु	इ	च् छ् ज् झ् ञ्	य्	श्
मूर्धा	ऋ	ट् ठ् ड् ढ् ण्	र्	ष्
दन्त	ऌ	त् थ् द् ध् न्	ल्	स्
ओष्ठ	उ	प् फ् ब् भ् म्	व्	

अल्प प्राण – प्रत्येक वर्ग का १-३-५ अक्षर अल्प प्राण है, क्योंकि इनके उच्चारण में प्राण शक्ति कम व्यय होती है जैसे क् ग् ङ् या च् ज् ञ् आदि

महा प्राण – प्रत्येक वर्ग का २-४ अक्षर महा प्राण है, क्योंकि इनके उच्चारण में प्राण शक्ति अधिक लगती है। जैसे ख्, घ् या छ् झ् आदि

विसर्ग - जिस वर्ण (स्वर या स्वर सहित व्यंजन) के बाद दो शून्य (:) आवे उसे विसर्ग कहते है। जैसे देवः। मुनिः गुरुः।

अनुस्वार - जिस वर्ण के ऊपर एक शून्य (ं) आवे उसे अनुस्वार कहते हैं। जैसे यां मेधां देवगणाः.....। अनुस्वार के उच्चारण में मुह बन्द हो जाता है।

अनुनासिक - जिस वर्ण के ऊपर चन्द्र बिन्दु (ँ) होता है उसे अनुनासिक कहते हैं। जैसे कँ। अँ। प्रत्येक वर्ण का पांचवां अक्षर। (ङ्, ञ्, न्, म्) अनुनासिक कहलाते हैं। अनुनासिक के उच्चारण में मुंह खुला रहता है।

अवग्रह - अ से पहले ए, ओ आवे तो बाद में आने वाला अ पहले आने वाले स्वर में मिल जाता है। उसका संकेत चिह्न (ऽ) होता है इसे अवग्रह या पूर्व रूप चिह्न कहते है।

जैसे - नगरे+अस्मिन् = नगरेऽस्मिन्।

प्रभो + अत्र = प्रभोऽत्र।

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें

१. वेद और उपवेद कौन कौन से हैं ?

२. उपनिषदों के नाम लिखो ?

३. नीचे दिये गये शब्दों के स्वर और व्यंजनों का अलग-अलग (जैसे-वर्षा = व्+अ+र्+ष्+आ) वर्णन करो ?

१. कक्षा-
२. छात्र -
३. अग्नि -
४. इन्द्र -
५. प्रभात -
६. बालक -
७. मरुत् -
८. विद्यालय -
९. प्रातः -
१०. गृह -

४. स्वर और व्यंजन में क्या भिन्नता है ? तथा ह्रस्व स्वर कौन से हैं ?

५. नीचे दिये गये वर्णों (स्वर-व्यंजनों) से शब्द बनाये ?

१. म्+अ+त्+स्+य्+अ =
२. अ+श्+व्+अ=
३. क्+आ+र्+य्+अ+क्+र्+अ+म्+अ=
४. स्+अ+म्+उ+द्+र्+अ=
५. च्+अ+न्+द्+र्+अ=
६. श्+ई+र्+ष्+अ+म्=
७. न्+ए+त्+र्+अ+म्=
८. स्+अ+र्+व्+अ+त्+र्+अ=
९. ज्+ञ्+आ+न्+ई=
१०. न्+ऋ+त्+य्+अ+न्+त्+इ=

पाठ - २

१) **शब्द** - वर्णों के समुदाय को जब वह किसी अर्थ का बोध कराता है तब उसे शब्द कहते हैं। जैसे-राम, पुस्तक, भोजन आदि।

शब्दों के भेद - संस्कृत में शब्द चार प्रकार के होते हैं :

१. **नाम** - किसी व्यक्ति या स्थान या वस्तु को बतलाने वाले शब्द नाम कहलाते हैं जैसे - राम, पुस्तक, जयपुर आदि।

२. **आख्यात** - क्रियावाचक शब्दों को आख्यात कहते हैं। जैसे पठति-पढ़ता है। गच्छति - जाता है। लिखति-लिखता है।

३. **उपसर्ग** - जो शब्द क्रिया से पहले आते हैं और क्रिया के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं उन्हें उपसर्ग कहते हैं।

जैसे - गच्छति जाता है। आगच्छति - आता है। अधिगच्छति - प्राप्त करता है।

आ-वि-प्र-अनु आदि २२ उपसर्ग हैं।

४. **निपात** (अव्यय) - जो शब्द सभी विभक्तियों, सभी वचनों तथा सभी लिंगों में अपरिवर्तित रहते हैं जिनके रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता है उन्हें निपात या अव्यय कहते हैं। जैसे - च, वा, अपि, एव, यथा, तथा आदि।

कर्ता - क्रिया के करनेवाले को कर्ता कहते हैं। जो तीन भागों में विभक्त हैं जिनको प्रथम पुरुष-मध्यम पुरुष तथा उत्तम पुरुष कहते हैं। प्रत्येक पुरुष-एकवचन, द्विवचन और बहुवचन इन तीन वचनों में विभक्त है।

कर्ता

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	१. सः (वह) पुरुष सा (वह) स्त्री	२. तौ (वे दोनों) ते (वे दोनों)	३. ते (वे सब) ताः (वे सब)
मध्यम पुरुष	४. त्वम् (तुम)	५. युवाम् (तुम दोनों)	६. यूयम् (तुम सब)
उत्तम पुरुष	७. अहम् (मैं)	८. आवाम् (हम दोनों)	९. वयम् (हम सब)

वर्तमानकाल – जो कार्य प्रारंभ हो चुका है और समाप्त नहीं हुआ है उसे वर्तमानकाल कहते हैं।

क्रिया (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	१. पठति	२. पठतः	३. पठन्ति
मध्यम पुरुष	४. पठसि	५. पठथः	६. पठथ
उत्तम पुरुष	७. पठामि	८. पठावः	९. पठामः

अनुवाद - कर्ता और क्रिया में पुरुष और वचन की समानता होनी चाहिये।

१. १. ७. ७.

जैसे - वह पढ़ता है = सः पठति। मैं पढ़ता हूँ=अहम् पठामि।

१. लिखति-लिखता है। वदति = बोलता है। ३. हसति - हँसता है। ४. धावति - दौड़ता है। ५.खादति = खाता है। इन सभी क्रियाओं के रूप पठति के समान बनते हैं।

सन्धि - १ म् के बाद कोई व्यंजन आवे तो म् का अनुस्वार होता है तथा म् के बाद कोई स्वर आवे तो स्वर म् में मिल जाता है।

जैसे - १. याम् मेधाम् देवगणाः - यां मेधां देवगणाः।

२. माम् अद्य - मामद्य

२. विसर्ग (:) के पहले अ तथा विसर्ग के बाद भी अ आवे तो विसर्ग के स्थान पर ओ हो जाता है। तथा विसर्ग के बाद में आने वाले अ का पूर्व रूप (ऽ) हो जाता है। अर्थात् अ, ओ, में मिल जाता है।

जैसे - १ रामः अयम् =रामो अयम्=रामोऽयम्। २. बाल : अत्र = बालो अत्र = बालोऽत्र।

शब्दार्थ - अस्ति=है। नास्ति=नहीं है। किमस्ति=क्या है ? अत्र = यहाँ। तत्र = वहाँ। कुत्र =कहाँ। यत्र = जहाँ। सर्वत्र = सब जगह। न = नहीं।

श्लोक - त्वमेव माता च पिता त्वमेव।
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव॥
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव।
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

सन्धि - (१) त्वम्+एव=त्वमेव (२) सर्वम्+मम=सर्वं मम

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें।

१) नीचे दिये गये वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करें।

१. तुम सब कहाँ पढ़ते हो ?
२. हम सब यहाँ पढ़ते हैं।
३. वह वहाँ क्या पढ़ता है ?
४. जहाँ वह पढ़ती है वहाँ तुम दोनो क्या पढ़ती हो ?
५. तुम सब जगह नहीं पढ़ती हो।

२) सन्धि करें :

१. सः अहम्
२. देवः अयम्
३. रामः अस्ति
४. कलम् नास्ति
५. पुस्तकम् इदम्

३) शुद्ध करें -

१. सः पठसि
२. त्वम् पठतः
३. अहम् पठति
४. यूयम् पठामि
५. ते पठामि

४. उचित शब्द का प्रयोग करें।

१. .....पठावः
२. ..... लिखथ
३. त्वम्..... (पठ)
४. स अत्र..... (पठ)
५. ..... पठामि

५) नीचे लिखी हुई क्रियाओं के वर्तमान काल के रूप (सभी पुरुष और वचनों में) लिखें।

१. लिख्=लिखति
२. वद्=वदति
३. गम् (गच्छ)=गच्छति
४. पठ्=पठति
५. हस्=हसति

पाठ - ३

शब्द - नाम वाचक शब्द तीन लिंगों में विभक्त है।
१. पुल्लिंग, २. स्त्रीलिंग, ३. नपुंसकलिंग

विभक्ति - तीनों लिंगों के शब्द आठ भागों में विभक्त होते हैं जिन्हें विभक्तियाँ कहते हैं। इस प्रकार आठ विभक्तियाँ होती है। प्रत्येक विभक्ति में एकवचन, द्विवचन और बहुवचन ये तीन वचन होते हैं।

वचन - एक को बतलाने के लिये एकवचन, दो को कहने के लिये द्विवचन तथा तीन या अधिक के लिये बहुवचन का प्रयोग होता है।

कर्ता - क्रिया के करनेवाले को कर्ता कहते हैं। जैसे रमेश पढ़ता है। यहाँ 'रमेश' कर्ता है। कर्ता तीन भागों में विभक्त हैं जिन्हें पुरुष कहते हैं। १) प्रथम पुरुष २) मध्यम पुरुष ३) उत्तम पुरुष (प्रत्येक पुरुष में एकवचन, द्विवचन और बहुवचन ये तीन भेद होते है। इस प्रकार कर्ता के नौ भेद हो जाते हैं।

उत्तम पुरुष - अहम् (मैं) आवाम् (हम दोनों) वयम् (हम सब) ये तीन शब्द उत्तम पुरुष में आते हैं।

मध्यम पुरुष - त्वम् (तुम) युवाम् (तुम दोनों) और यूयम् (तुम सब) ये तीन शब्द मध्यम पुरुष में आते हैं।

प्रथम पुरुष - मध्यम और उत्तम पुरुष को छोड़कर शेष सभी नामवाचक शब्द प्रथम पुरुष में आते हैं। जैसे राम, रमा, बालक, सः (वह), एषः (यह), वानरः (बन्दर), अश्वः (घोड़ा) आदि शब्द प्रथम पुरुष के माने जाते हैं।

उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष में पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों में समान शब्द का प्रयोग होता है। जैसे तुम पढ़ते हो या तुम पढ़ती हो का

अनुवाद ''त्वम् पठसि'' होता है। जब कि प्रथम पुरुष में आने वाले सभी शब्द तीनों लिंगों (पुल्लिंग-स्त्रीलिंग-नपुंसकलिंग) में प्रयुक्त होते हैं।

जैसे - वह पढ़ता है - सः पठति (He reads)

वह पढ़ती है - सा पठति (She reads)

कर्ता

जैसे कर्ता के तीन पुरुष और तीन वचनों में नौ भेद होते हैं वैसे ही क्रिया के भी नौ भेद कर्ता के अनुसार होते हैं, जिसे द्वितीय पाठ में बताया गया है। जैसे

प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

प्रथमा विभक्ति - कर्ता जब किसी कार्य को करता है तब उसे बतलाने के लिये कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे रमेश पढ़ता है=रमेशः पठति। लता लिखती है=लता लिखति। यहाँ पढ़ने और लिखने की क्रिया के करनेवाले रमेश और लता है इसलिये इनको कर्ता कहते हैं और इनमें प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है।

जिन नाम वाचक शब्दों के अन्त में अ-आ-इ-उ आदि स्वर आते हैं वे शब्द अकारान्त-आकारान्त-इकारान्त-उकारान्तादि शब्द कहलाते हैं।

अकारान्त पुल्लिंग वाचक **'देव'** (देव्+अ=देव) शब्द

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
	१.	२.	३.
प्रथमा विभक्ति	देवः	देवौ	देवाः

आकारान्त स्त्रीलिंग वाचक **'लता'** (लत्+आ=लता) शब्द

	१.	२.	३.
प्रथमा विभक्ति	लता	लते	लताः

अकारान्त नपुसंकलिंग वाचक **'वन'** (वन्+अ=वन) शब्द

	१.	२.	३.
प्रथमा विभक्ति	वनम्	वने	वनानि

जैसे - लड़का दौड़ता है = बालकः धावति। पुरुष पढ़ता है = पुरुषः पठति। दो तपस्वी जाते हैं = तापसौ गच्छतः। मोर नाच रहे हैं = मयूराः नृत्यन्ति। दो घोड़े दौड़ रहे हैं = अश्वौ धावतः।

शब्दार्थ - तापसः = तपस्वी। मयूरः = मोर। अश्वः = घोड़ा। कदा = कब। यदा = जब। तदा = तब। अधुना = अब। सदा = हमेशा

विशेष - अहम्-आवाम्-वयम् (उत्तम पुरुष) तथा त्वम्-युवाम्-यूयम् (मध्यम पुरुष) इन शब्दों को छोड़कर शेष सभी शब्द प्रथम पुरुष के माने जाते हैं। अतः इनके साथ क्रिया भी प्रथम पुरुष की ही आती है। जैसे रमेश पढ़ता है-रमेशः पठति। लता पढ़ती है - लता पठति। मनुष्य जाता है - नरः गच्छति।

सन्धि नियम ३ - विसर्ग से पहले 'अ' हो और विसर्ग के बाद किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा या पांचवां अक्षर अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है।

जैसे - भर्गः देवस्य = भर्गो देवस्य और धियः यः नः प्रचोदयात् = धियो यो नः प्रचोदयात्॥

आपः भवन्तु = आपो भवन्तु। देवः गच्छति = देवो गच्छति

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें।

१) नीचे दिये गये वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करे।

१. रमा कहाँ पढ़ती है ?
२. लता वहाँ पढ़ती है।
३. सुरेश कब दौड़ता है ?
४. रमेश जब पढ़ता है तब सुरेश यहाँ दौड़ता है।
५. वह सब जगह बोलती है ।

२) सन्धि करें :

१. देवः ददाति
२. बालकः धावति
३. श्यामः हसति
४. पुत्रः गच्छति
५. छात्रः लिखति

३) शुद्ध करें -

१. सुरेशः पठसि
२. लता - पठामि
३. देवौ - पठावः
४. बालिके - पठथ
५. वयम् पठन्ति

४. उचित शब्द का प्रयोग करें।

१. एषः ..... (लिख्)
२. देवौ ..... (पठ्)
३. लता .....(धाव्)
४. वयम् .....(पच्)
५. युवाम् .....(वद्)

५) प्रथमा विभक्ति के रूप लिखें -

१. राम - वेद (पुल्लिंग)
२. माला - सुधा (स्त्रीलिंग)
३. फल - पुस्तक (नपुंसकलिंग)

पाठ - ४

संस्कृत में आप के लिये पुल्लिंग में भवान् शब्द प्रयुक्त होता है तथा स्त्रीलिंग में भवती शब्द का प्रयोग होता है। ये दोनों शब्द प्रथम पुरुष के हैं अतः इनके साथ क्रिया भी प्रथम पुरुष की प्रयुक्त होती है। जैसे - आप पढ़ते है (भवान् पठति) या आप पढ़ती है। (भवती पठति)।

पुल्लिंग -	**भवान्**	**भवन्तौ**	**भवन्तः**
स्त्रीलिंग -	**भवती**	**भवत्यौ**	**भवत्यः**

वाक्यप्रयोग -
आप दोनो पढ़ते हैं - भवन्तौ पठतः।
आप दोनो पढ़ती हैं - भवत्यौ पठतः।
आप सब पढ़ते हैं - भवन्तः पठन्ति।
आप सब पढ़ती हैं - भवत्यः पठन्ति।

द्वितीया विभक्ति - कर्ता जिस कार्य को करता है उसे कर्म कहते हैं। कर्म में अथवा जिस शब्द के बाद ''को'' आ जावे उस शब्द में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे राम पुस्तक पढ़ता है। लड़का बन्दर को देखता है। यहाँ पुस्तक और बन्दर में द्वितीया विभक्ति होती है। इसके शब्द रूप इस प्रकार बनते हैं।

अकारान्त पुल्लिंग ''देव'' शब्द

द्वितीया विभक्ति	देवम्	देवौ	देवान्	(कर्म).

आकारान्त स्त्रीलिंग ''लता'' शब्द

द्वितीया विभक्ति	लताम्	लते	लताः	(कर्म)

अकारान्त नपुंसकलिंग ''वन'' शब्द

द्वितीया विभक्ति	वनम्	वने	वनानि	(कर्म)

इकारान्त पुल्लिंग ''मुनि'' शब्द

प्रथमा विभक्ति	मुनिः	मुनी	मुनयः	(कर्ता)
द्वितीया विभक्ति	मुनिम्	मुनी	मुनीन्	(कर्म)

उकारान्त पुल्लिंग ''भानु'' शब्द

प्रथमा विभक्ति	भानुः	भानू	भानवः	(कर्ता)
द्वितीया विभक्ति	भानुम्	भानू	भानून्	(कर्म)

ईकारान्त स्त्रीलिंग ''नदी'' शब्द

प्रथमा विभक्ति	नदी	नद्यौ	नद्यः	(कर्ता)
द्वितीया विभक्ति	नदीम्	नद्यौ	नदीः	(कर्म)

अनुवाद – राम पुस्तक पढ़ता है। रामः (१-१) पुस्तकम् (२-१) पठति।
लड़का बन्दर को देखता है। बालकः (१-१) वानरम् (२-१) पश्यति।
मुनि रवि को देखता है। मुनिः(१-१) रविम् (२-१) पश्यति।
लता पत्रिका लिखती है। लता (१-१) पत्रिकाम् (२-१) लिखति।
रवि पशुओं को लाता है। रवि (१-१) पशून् (२-३) आनयति।

सन्धि नियम ४ – विसर्ग से पहले अ हो और विसर्ग के बाद अ को छोड़कर कोई भी स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

जैसे - रामः आगच्छति = राम आगच्छति।
जीवः एकः = जीव एकः। नमः + इषुभ्यः = नम इषुभ्यः

सन्धि नियम ५ – विसर्ग से पहले ''आ'' हो और विसर्ग के बाद कोई भी स्वर या किसी भी वर्ग का ३-४-५ अक्षर अथवा य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।
देवाः + अत्र = देवा अत्र। बालकाः गच्छन्ति = बालका गच्छन्ति।

मन्त्र – ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव॥

सन्धि विच्छेद - यत् + भद्रम् + तत् + नः + आसुव = यद् भद्रं तन्न आसुव ॥

अर्थ - सवितः (८-१) देव (८-१) हे संसार के बनाने वाले परमेश्वर विश्वानि (२-३) दुरितानि (२-३) हमारे दुर्गुण दुर्व्यसनों और दुःखों को (परासुव) दूर कर दीजिये, यत् (१-१) भद्रम् (१-१) जो गुण है। तत् (२-१) उसको (नः) हमें (आसुव) प्राप्त कराइये।

श्लोक - भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः ।
तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः ॥
कालो न यातो वयमेव याताः ।
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः ॥

सन्धि विच्छेद तथा विभक्ति वचन -

भोगाः (१-३) + नः = भोगा न

भुक्ताः (१-३) + वयम् +एव् = भुक्ता वयमेव

तपः (१-१) + न + तप्तम् + वयम् + एव = तपो न तप्तं वयमेव

तृष्णाः (१-३) + न = तृष्णा न।

जीर्णाः (१-३) + वयम् + एव = जीर्णा वयमेव

अर्थ - हमने भोगों को नहीं भोगा अपितु भोगों ने हमको ही भोग लिया। हमने तप नहीं किया अपितु तप ने हमको ही तपा दिया। समय व्यतीत नहीं हुआ अपितु हम स्वयं व्यतीत हो रहे हैं अर्थात् मनुष्य बाल्यावस्था से युवा और युवावस्था से वृद्धावस्था की ओर बढ़ रहा है इच्छाएं वासनाएं वृद्ध नहीं हुई अपितु हम वृद्ध हो गये हैं अर्थात् हम इच्छाओं को पूरा करते हुए वृद्ध हो गये।

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें।

१) नीचे दिये गये वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करें।

१. रमा विद्यालय कब जाती है ?
२. लड़कियाँ वहाँ पत्रिकाएँ पढ़ती हैं।
३. दो लड़के यहाँ पशुओं को देख रहे हैं।
४. मुनि नदी को जाते हैं।
५. कवि कविता लिखता है।

२) शब्द रूप लिखें।

खलः (दुष्ट) अश्वः (घोड़ा), गजः (हाथी), मयूरः (मोर),खगः (पक्षी), कविः (कवि), असिः (तलवार), कपिः (बन्दर), वायुः पशुः तरुः (वृक्ष), प्रभुः फलम् जलम् नयनम् (आंख), मुखम् (मुंह), माला, पाठशाला, अजा (बकरी) कथा रमा आदि शब्दों की प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के रूप लिखें।

३) सन्धि करें :

१. देवः + एव
२. बालः + इच्छति
३. जनाः + गच्छन्ति
४. देवाः + हसन्ति
५. रामः + वदति

४) शुद्ध करें -

१. भवती गच्छसि
२. भवान् पठन्ति
३. रामः पत्रिका लिखति
४. त्वम् मुनिं पश्यति
५. वयम् पाठशाला गच्छामः

५. उचित शब्द का प्रयोग करें।

१. देवः ..... गच्छति (ग्राम)
२. ..... पुस्तकम् पठति (बाल)
३. मुनिः .....लिखति (पत्रिका)
४. ..... हसन्ति (जन)
५. मुनी वनं ..... (आगच्छ)

पाठ - ५

तृतीया विभक्ति - कर्ता जिस साधन से कार्य करता है उसे 'करण' कहते हैं। करण में अथवा जिस शब्द के बाद ''से या द्वारा'' शब्द आता है उसमें तृतीया विभक्ति होती है। जैसे १) शीला आंखों से देखती है। २) रमेश हाथ से लिखता है। यहाँ पर 'हाथ' तथा 'आंख' (नेत्र) शब्द में तृतीया विभक्ति होती है।

'देव'

तृतीया विभक्ति	-	देवेन	देवाभ्याम्	देवैः (करण)

'मुनि'

तृतीया विभक्ति	-	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः (करण)

'भानु'

तृतीया विभक्ति	-	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः (करण)

'लता'

तृतीया विभक्ति	-	लतया	लताभ्याम्	लताभिः (करण)

'नदी'

तृतीया विभक्ति	-	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः (करण)

अकारान्त नपुसकलिंग में विद्यमान 'वन' शब्द के शेष विभक्तियों के रूप देव की तरह ही रूप बनते हैं।

अनुवाद - रमेश हाथ से लिखता है - रमेशः हस्तेन लिखति।
शीला आँखों से देखती है - शीला नेत्राभ्यां पश्यति।

विशेष - जिस शब्द के बाद 'साथ' शब्द आता है उस शब्द में तृतीया विभक्ति होती है तथा 'साथ' शब्द के लिये संस्कृत में सह अथवा सार्धम् शब्द का प्रयोग किया जाता है।

जैसे - महेश के साथ सुरेश विद्यालय जाता है।
महेशेन सह सुरेशः विद्यालयम् गच्छति।
रमा के साथ लता पढ़ती है। (रमया सह लता पठति।)

अनुवाद - कपिः मुखेन फलं खादति। बालिका कर्णाभ्याम् उपदेशं श्रृणोति। लतया सह बालिके क्रीडतः। जनाः पुष्पैः गुरुम् पूजयन्ति। बालकाः मुनिभिः सह गच्छन्ति। वयम् कन्दुकेन क्रीडामः।

सन्धि (६) - विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई भी स्वर हो और विसर्ग के बाद कोई भी स्वर या किसी वर्ग का ३-४-५ अक्षर अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् हो तो विसर्ग का 'र्' होता है। 'र्' के बाद स्वर आवे तो स्वर 'र्' से मिल जाता है तथा 'र्' के बाद व्यंजन आवे तो 'र्' व्यंजन के ऊपर लिखा जाता है।

जैसे - शान्तिः+आपः=शान्तिर् आपः=शान्तिरापः। गुरुः+इच्छति=गुरुर् इच्छति=गुरुरिच्छति। सवितुः + वरेण्यम्=सवितु वरेण्यम्। भूः+भुवः=भू र्भुवः।

मन्त्र - यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥

सन्धि विच्छेद - याम्+मेधाम्+देवगणाः= यां मेधां देवगणाः। पितरः+च+उपासते=पितरश्चोपासते।

माम्+अद्य=मामद्य। मेधया+अग्ने=मेधयाग्ने। मेधाविनम्+कुरु=मेधाविनं कुरु।

मन्त्रार्थ - अग्ने (८-१) देवगणाः (१-३) पितरः (१-३) च। याम् (२-१) मेधाम् (२-१) उपासते=हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! देवता और पितर लोग जिस मेधाबुद्धि की उपासना (प्राप्त) करते हैं।

तया (३-१) मेधया (३-१) माम् (२-१) अद्य। मेधाविनम् (२-१) कुरु=उस मेधाबुद्धि से मुझको आज बुद्धिमान् कीजिए। स्वाहा=सु आह - ऐसा मैं नम्रता पूर्वक निवेदन करता हूँ।

श्लोक - श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन। दानेन पाणि र्न तु कङ्कणेन।
विभाति कायः करुणामयानां। परोपकारै र्न तु चन्दनेन ॥

सन्धि - श्रुतेन(३-१)+एव। पाणिः(१-१)+ न।परोपकारैः(३-३)+न।

अर्थ - श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन = शास्त्र के श्रवण से ही कान सुशोभित होते हैं, कुण्डल पहनने से नहीं। दानेन पाणिर्न तु कंङ्कणेन=दान देने से हाथों की शोभा है। हाथों में कंगन पहनने से नहीं। करुणामयानां कायः परोपकारैः विभाति = दयालु व्यक्तियों का शरीर परोपकार से सुशोभित होता है, न तु चन्दनेन = शरीर पर चन्दनादि के लेपन से शरीर सुशोभित नहीं होता है।

च का प्रयोग - जब वाक्य में दो या दो से अधिक कर्ता 'या' क्रिया का प्रयोग होता हो तथा उनके बीच में ''और'' शब्द का प्रयोग होता है तब ''और'' शब्द के लिये संस्कृत में 'च' शब्द का प्रयोग होता है तथा हिन्दी में जिस शब्द के पहले ''और'' शब्द का प्रयोग होता संस्कृत में उस शब्द के बाद 'च' का प्रयोग होता है।

जैसे - राम पढ़ता है और हंसता है = रामः पठति हसति च।
राम और श्याम पढ़ते हैं = रामः श्यामः च पठतः।

शब्दार्थ -

वस्त्रम्	=	कपड़ा।
चन्द्रः	=	चन्द्रमा।
कपिः	=	बन्दर।
मुखम्	=	मुंह।
कर्णः	=	कान।
श्रृणोति	=	सुनता है।
कन्दुकम्	=	गेंद।

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें।

१) वर्तमान काल में निम्नलिखित क्रियाओं के रूप लिखो

१) रक्षति = रक्षा करता है।
२) क्रीडति = खेलता है।
३) पचति = पकाता है।
४) पिबति = पीता है।
५) क्षालयति = धोता है।
६) पतति = गिरता है।
७) नृत्यति = नाचता है।
८) पश्यति = देखता है।
९) पूजयति = पूजा करता है।
१०) क्रन्दति = रोता है।

२) निम्नलिखित शब्दों के प्रथमा, द्वितीया और तृतीया विभक्ति के रूप लिखें

रमा, माला, रवि, पशु, तरु, कवि, देवी आदि

३) अनुवाद करें

१) रमा के साथ लता पाठशाला जाती है।
२) रवि आँखों से चन्द्रमा देखता है।
३) तुम दोनों पानी से कपड़े धोते हो।
४) लड़के गेंद से वहाँ खेल रहे हैं।
५) पशुओं के साथ गोपाल जंगल को जाता है।

४) शान्ति पाठ की सन्धि करें।

शान्तिः अन्तरिक्षम्। शान्तिः आपः।
शान्तिः ओषधयः शान्तिः।
शान्तिः विश्वेदेवाः। शान्तिः ब्रह्म
शान्तिः एव शान्तिः सा मा शान्तिः एधि

५) शुद्ध करें-

१) राम हस्तं पत्रं लिखति।
२) मुनिः जलं वस्त्रं क्षालयति।
३) लतां सह रमा गच्छति।
४) रामः श्यामः च पठति।

पाठ - ६

चतुर्थी विभक्ति - १) जिसको कोई वस्तु देते हैं उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे राम श्याम को पुस्तक देता है। यहाँ 'श्याम' शब्द में चतुर्थी विभक्ति होती है। १. रामः **श्यामाय** पुस्तकम् यच्छति।

२) जब एक कार्य के लिये दूसरा कार्य किया जाता है अर्थात् जिस शब्द के बाद हिन्दी में ''के लिये'' शब्द आता है उसे सम्प्रदान कहते हैं तथा संप्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है।

जैसे - रमेश घूमने के लिये वहाँ आता है। यहाँ पर घूमने (भ्रमण) शब्द में चतुर्थी विभक्ति होती है जैसे - रमेशः **भ्रमणाय** तत्र गच्छति।

चतुर्थी विभक्ति में शब्दों के अधोलिखित रूप

देव	-	देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्यः	(सम्प्रदान)
मुनि	-	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः	(सम्प्रदान)
भानु	-	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः	(सम्प्रदान)
लता	-	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः	(सम्प्रदान)
नदी	-	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः	(सम्प्रदान)

अनुवाद - छात्रः पठनाय पाठशालां गच्छति। जनाः कल्याणाय ईश्वरं पूजयन्ति। बालकौ गुरवे फलानि आनयन्ति। रमा लतायै पत्रिकां यच्छति। मुनयः फलेभ्यः उद्यानं गच्छन्ति।

सन्धि (७) - विसर्ग के पहले कोई भी स्वर हो और विसर्ग के बाद क, ख, प, फ, हो तो विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता है। विसर्ग के बाद च, छ आवे तो विसर्ग का 'श्' ट, ठ आवे तो ष् तथा त्, थ् आवे तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है।

जैसे - नः + प्रचोदयात् = नः प्रचोदयात्। वृक्षः + फलति = वृक्षः फलति। कविः + क्रीडति = कविः क्रीडति। बालः + खादति = बालः खादति। मुनिः चलति = मुनिश्चलति। धनुः + टंकार = धनुष्टंकारः। रविः तरति = रविस्तरति।

सन्धि (८) - विसर्ग के बाद श्, ष्, स् आवे तो विसर्ग का विसर्ग ही रहता है या विसर्ग का क्रमशः श्, ष्, स् हो जाता है।

१. बालः + शेते = बालः + शेते अथवा बालश्शेते
२. सर्पः + सरति = सर्पः + सरति अथवा सर्पस्सरति

सन्धि (९) - सः (वह) एषः (यह) के विसर्ग के बाद अ को छोड़कर कोई स्वर या व्यंजन आवे इनके विसर्ग का लोप हो जाता है। यदि विसर्ग के बाद 'अ' आवे तो विसर्ग का ओ हो जाता है।

१. सः + अयम् = सो अयम् सोऽयम्
२. सः + इच्छति = स इच्छति
३. सः + पठति = स पठति
४. एषः + गच्छति = एष गच्छति

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः।
परोपकाराय वहन्ति नद्यः॥
परोपकाराय दुहन्ति गावः।
परोपकारार्थमिदं शरीरम्॥
(सन्धि विच्छेद - परोपकारार्थम् + इदम् + शरीरम्)

१-३ ४-१
अर्थ - वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति = वृक्ष परोपकार के लिये फल देते हैं।
१-३ ४-१
नद्यः परोपकाराय वहन्ति = नदियां परोपकार के लिये बहती हैं।
१-३ ४-१
गावः परोपकाराय दुहन्ति = गौवें परोपकार के लिये दूध देती हैं।
१-१ १-१ १-१
इदम् शरीरम् परोपकारार्थम् = अतः यह शरीर भी परोपकार के लिये है।

शब्दार्थ -

यच्छति	=	देता है।	पठनम्	=	पढ़ना।
सुखम्	=	सुख।	पूजयति	=	पूजा करता है।
जनः, नरः	=	मनुष्य।	कदा	=	कब।
यदा	=	जब।	तदा	=	तब।
अधुना	=	अब।	सदा	=	हमेशा

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें।

१) संस्कृत में अनुवाद करें-

१. लड़कियाँ लड़कों को पुस्तकें दे रही है।
२. मोहन सोहन को फल देता है।
३. वह पढ़ने के लिये विद्यालय जाती है।
४. मनुष्य सुख के लिये ईश्वर की पूजा करते हैं।
५. तुम दोनों भोजन के लिये घर कब जाते हो ?

२) शुद्ध करें -

१. सुषमा लतां वस्त्रं यच्छति।
२. त्वम् हस्तेन पत्रिका लिखति।
३. अहम् मुखं जलम् पिबाम।
४. बालकाः विद्यालयः गच्छति।
५. वयम् नासिका पुष्पं जिघामः।

३) उचित शब्द का प्रयोग -

१) ..... ईश्वरं नमथः (जनौ, युवाम्, आवाम्)
२) देवी ..... गृहं गच्छति (भोजनाय, भोजनेन, भोजनम्)
३) वयम् पठनाय पाठशालाम् ..... (गच्छसि, गच्छन्ति, गच्छामः)
४) ..... पत्रं लिखावः (पुरुषौ, आवाम्, युवाम्)
५) गुरुः ..... पुस्तकं यच्छति (शिष्यम् शिष्यः शिष्याय)

४) सन्धि विच्छेद करें -

अ)
१. पाण्डवाश्च
२. देवीराप
३. आपो भवन्तु
४. अग्निरधिपतिरसितो रक्षिता
५. गुरुरागच्छति

ब) सन्धि करें
१. देवः अस्ति
२. मुनिः इच्छति
३. बालः आयाति
४. कपिः खादति
५. एषः वदति

५) अधोलिखित चतुर्थी विभक्ति का रूप लिखें -

गज - वेद - विद्या - माला - रिपु - गुरु - कवि - कपि - देवी - गौरी

६) श्लोक का अर्थ करें -

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय च संभवामि युगे युगे॥

पाठ - ७

पंचमीविभक्ति - कर्ता जिससे अलग हटता है उसे अपादान कहते है। अपादान कारक में अथवा हिन्दी में जिस शब्द के बाद 'से' आता है उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे बालक विद्यालय से आता है=बालकः विद्यालयात् - आगच्छति

विशेष - जिस साधन से कार्य किया जाता है उसमें तृतीया विभक्ति होती है तथा जिससे अलग हटते हैं उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जब कि दोनों ही शब्दों के बाद 'से' आता है। जैसे वह घर से (पंचमी विभक्ति) साईकिल से (तृतीया विभक्ति) यहाँ आता है = सः गृहात् द्विचक्रिकया अत्र आगच्छति।

पंचमी विभक्ति

देव	-	देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्यः	(अपादान)
मुनि	-	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः	(अपादान)
भानु	-	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः	(अपादान)
लता	-	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः	(अपादान)
नदी	-	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः	(अपादान)

अनुवाद - बालकः हस्तात् कन्दुकम् क्षिपति। बालिका पाठशालायाः गच्छति। मुनिः वायुयानेन जयपुरनगरात् दिल्लीनगरं गच्छति। वृक्षात् फलानि पतन्ति। कवयः पुस्तकालयात् गुरवे पुस्तकानि नयन्ति।

'लकार'

संस्कृत में क्रियाओं का वर्तमान - भूत और भविष्यत् इन तीन कालों में प्रयोग होता है। इन तीन कालों के १० भेद होते हैं जिन्हें 'लकार' कहते हैं। वर्तमानकाल में 'लट्' लकार का प्रयोग होता है। जैसे-पठति-(पढ़ता है) लिखति-(लिखता है) इत्यादि क्रियाओं के रूप लट् लकार (वर्तमान काल) के होते हैं।

भविष्य काल – जब कोई कार्य प्रारम्भ नहीं हुआ है, आगे होनेवाला है अथवा जिन क्रियाओं के अन्त में गा, गी या गे का प्रयोग होता है, तब उसे भविष्यकाल की क्रिया कहते हैं चाहे आज कोई कार्य होगा या आज के बाद किसी भी दिन कार्य होगा उसे भविष्यकाल कहते हैं उसमें 'लृट्' लकार का प्रयोग होता है। लृट् लकार में क्रिया के रूप निम्नलिखखित होते हैं। वह पुस्तक पढ़ेगा = सः पुस्तकं पठिष्यति। तुम कहां जाओगी = त्वं कुत्र गमिष्यसि। पिताजी वहाँ जावेंगें = जनकः तत्र गमिष्यति।

सामान्य भविष्यकाल – 'लृट्' लकार

	१	२	३
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
	४	५	६
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथः
	७	८	९
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

पठिष्यति के समान अन्य क्रियाओं के लृट् लकार के रूप बनते है।

१. खादिष्यति	–	खायेगा	२. गमिष्यति	–	जायेगा
३. आगमिष्यति	–	आयेगा	४. क्रीडिष्यति	–	खेलेगा
५. धाविष्यति	–	दौड़ेगा	६. रक्षिष्यति	–	रक्षा करेगा
७. हसिष्यति	–	हँसेगा	८. पतिष्यति	–	गिरेगा
९. नर्तिष्यति	–	नाचेगा	१०. वदिष्यति	–	बोलेगा
११. पास्यति	–	पीयेगा	१२. पक्ष्यति	–	पकायेगा
१३. द्रक्ष्यति	–	देखेगा	१४. श्रोष्यति	–	सुनेगा
१५. नेष्यति	–	ले जायगा			

विशेष सन्धि नियम (१०) – शब्द में र् या ष् के बाद न् आवे तो न् का ण् हो जाता है जैसे मुष्+नाति = मुष्णाति तथा र् या ष् तथा न् के बीच में कोई भी स्वर तथा क वर्ग या प वर्ग का कोई भी अक्षर हो अथवा य्, र् व्, ह

हो तब भी न् का ण् हो जाता है। जैसे शरीराणि अपराणि में 'र्' के बाद आ आने पर भी उसके बाद आनेवाले नि के न् का ण् हो जाता है जैसे -

श्+अ+र् ई+र्+आ+न्+इ शरीरानि = शरीराणि

अ+प्+अ+र्+आ+न्+इ = अपरानि = अपराणि

किन्तु शब्द के अन्त में र् या ष् के बाद न् आवे तो न् का ण् नहीं होता है जैसे 'रामान् (र्+आ+म्+आ+न्) पुरुषान् (प्+उ+र्+उ+ष्+आ+न्) आदि।

वा का प्रयोग - हिन्दी में जिस शब्द से पहले ''या'' और ''अथवा'' शब्द का प्रयोग हो तो उनके (या तथा अथवा) के लिये संस्कृत में 'वा' शब्द का प्रयोग होता है तथा 'वा' का प्रयोग उस शब्द के बाद होता है। जैसे -

राम पढ़ता है या हँसता है-रामः पठति हसति वा। राम अथवा श्याम जाता है-रामः श्यामः वा गच्छति।

श्लोक - वासांसि जीर्णानि यथा विहाय। नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि॥
तथा शरीराणि विहाय जीर्णानि। अन्यानि संयाति नवानि देही॥

सन्धि विच्छेद - नरः + अपराणि

अर्थ -

१-१ २-३ २-३ २-३ २-३

यथा नरः जीर्णानि वासांसि विहाय अपराणि नवानि गृह्णाति।

मनुष्य जैसे पुराने कपड़ों को छोड़कर नये कपड़े पहनता है

१-१ २-३ २-३ २-३ २-३

तथा देही जीर्णानि शरीराणि विहाय अन्यानि नवानि संयाति।

वैसे जीवात्मा पुराने शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण करता है।

शब्दार्थ - कन्दुकम् = गेंद।
क्षिपति = फेंकता है।
वायुयानम् = हवाई जहाज।

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें।

१) वर्तमान काल और भविष्यकाल में अनुवाद करें।

१. लड़का पाठशाला से घर जाता है / जायेगा।
२. रवि वृक्ष से गिरता है / गिरेगा।
३. मैं पुस्तकालय से मित्र के लिये पुस्तक लाता हूँ / लाऊँगा।
४. तुम मुँह से भोजन खाते हो / खावोगे।
५. वे सब कल्याण के लिये ईश्वर की पूजा करते हैं / पूजा करेंगे।

२) शुद्ध करो

१. त्वम् विद्यालयेन आगच्छति।
२. सः हस्तात पत्रम् लिखति।
३. त्वम् वायुयानं जयपुरं गच्छति।
४. बालकः वानराः पश्यति।
५. अश्वेन बालिका पतिष्याति।

३) शब्द रूप लिखें -

रवि, कवि, गुरु, अश्व, गज, विद्या-माला-रवि-कवि-गुरु-पशु देवी-गौरी आदि शब्दों के रूप अपादान कारक (पंचमी विभक्ति) पर्यन्त लिखें।

४) उचित शब्द का प्रयोग करें

१. देवः ..... गच्छति (गृहस्य, गृहात्, गृहेण)
२. ..... सह श्यामः विद्यालयं आगच्छति। (देवेन, देवम्, देवाय)
३. बालः ..... पुस्तकं यच्छति। (रामः, रामम्, रामाय)
४. सः ..... अत्र पठति (वेदः, वेदेन, वेदम्)
५. ..... विद्यालयं गमिष्यामः (यूयम्, ताः, वयम्)

५) वर्तमानकाल और भविष्यकाल में रूप लिखें ?

१. पिब (पा) २. पच् ३. गच्छ (गम्) ४. वद्

पाठ - ८

षष्ठी विभक्ति - जिन शब्दों के बाद का, की, के आदि सम्बन्धवाचक शब्द आते हैं उन शब्दों में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे - १) राम का लड़का पढ़ता है। २) लता की बहिन जाती है। ३) श्याम के पिताजी आते हैं। इन सब वाक्यों में का, की, के से पहले आनेवाले राम, लता, श्याम आदि शब्दों में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे -

१) रामस्य पुत्रः पठति।

२) लतायाः भगिनी गच्छति।

३) श्यामस्य जनकः आगच्छति।

षष्ठी विभक्ति

देव	-	देवस्य	देवयोः	देवानाम्
मुनि	-	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
भानु	-	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
लता	-	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
नदी	-	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्

अनुवाद - ग्रामस्य जनाः नगरं गच्छन्ति। मुनेः आश्रमात् कविः अत्र आगच्छति। बालिके तत्र जनन्याः वस्त्राणि जलेन क्षालयतः। शिष्यः गुरोः पाठशालां पश्यति। पर्वतानां शिखरेभ्यः जलं वहति।

स्वर सन्धि (११) - अ, इ, उ तथा ऋ के बाद समान स्वर आवे तो दोनों के स्थान पर दीर्घ आ, ई, ऊ और ॠ हो जाते हैं। इसे सवर्ण दीर्घ सन्धि कहते हैं।

शश + अंक = शशांकः। रत्न + आकरः = रत्नाकरः। विद्या + आलयः = विद्यालयः। यदि + इदम् = यदीदम्। भानु + उदय = भानूदय। मातृ = ऋणम् = मातॄणम्।

(१२) इ, उ, ऋ, ऌ के बाद यदि कोई असमान स्वर आवे तो इ का य्, उ का व्, ऋ का र् तथा ऌ का ल् हो जाता है इसे यण् सन्धि कहते हैं।

यदि (यद्+इ) + अपि = (यद् य् + अपि) यद्यपि। जीर्णानि + अन्यानि = जीर्णान्यन्यानि। मधु + अत्र = मध्वत्र। पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा। ऌ + आकृतिः = लाकृति।

क्रियाएं - संस्कृत में लगभग दो हजार क्रियाएं हैं जो दस भागों में विभक्त है। उन (भागों) को 'गण' कहते हैं। प्रत्येक गण का गण बोधक प्रत्यय (वर्ण) क्रिया के पश्चात् तथा ति-तः अन्ति आदि प्रत्यय से पहले प्रयुक्त होता है। जैसे **प्रथम गण** को ''भ्वादि'' गण कहते हैं तथा **षष्ठ गण** को ''तुदादि गण'' कहते हैं। इन दोनों का गणबोधक प्रत्यय (वर्ण) 'अ' प्रयुक्त होता है। जैसे पठ्+अ+ति=पठति। लिख+अ+ ति=लिखति। **चतुर्थ गण** को 'दिवादिगण' कहते हैं इस का गणबोधक प्रत्यय 'य' ति से पहले प्रयुक्त होता है। जैसे नृत्+य+ति=नृत्यति=नाचता है। कुप्+य+ति=कुप्यति=क्रोध करता है। नश्+य+ ति=नश्यति=नष्ट होता है। इसी प्रकार शुध्यति=शुद्ध होता है। सिध्यति=सिद्ध होता है। शुष्यति=सूखता है आदि क्रियाओं के रूप बनते हैं।

शोषयति=सुखाता है। शोधयति=शुद्ध करता है। नाशयति=नष्ट करता है। नर्तयति=नचाता है। पाठयति=पढ़ाता है।

श्लोक - विद्या विवादाय धनं मदाय।
शक्तिः परेषां परिपीडनाय॥
खलस्य साधो र्विपरीतमेतद्।
ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥

सन्धि - साधोः + विपरीतम् + एतद्
६-१ १-१ ४-१ १-१ ४-१ १-१ ६-३ ४-१

अर्थ - खलस्य विद्या विवादाय, धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय।

दुर्जन की विद्या विवाद के लिये, धन अहंकार के लिये, शक्ति दूसरों को पीड़ा देने के लिये होती है।

६-१ १-१ १-१ ४-१ ४-१ ४-१

साधो : एतद् विपरीतम् ज्ञानाय दानाय रक्षणाय च ।

किन्तु इसके विपरीत सज्जन की विद्या दूसरों को ज्ञान देने के लिये, धन दान देने के लिये और शक्ति दूसरों की रक्षा के लिये होती है ।

शब्दार्थ - भ्राता = भाई ।
कन्दुक = गेंद ।
भगिनी = बहिन ।
मयूरः = मोर,
आनयति = लाता है ।
नयति = ले जाता है ।
नेष्यति = ले जायेगा ।
आनेष्यति = लायेगा
शिखरः = शिखर (चोटी) ।

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें ।

१) वर्तमान काल और भविष्यकाल में अनुवाद करें ।

१. गुरु के आश्रम से लड़के आयेंगे । आते हैं ।
२. लता का भाई गेंद से खेलता है । खेलेगा ।
३. रवि के लिये कवि पुस्तक लाता है । लायेगा ।
४. आज यहाँ मोर नाँच रहे हैं और दो लड़कियाँ मोरों को देख रही हैं ।
५. हम दोनों विद्यालय जायेंगे और तुम सब यहाँ पढ़ोगे ।

२) शुद्ध करो

१. गुरुस्य पुत्रः गच्छति।

२. वेदमुनिस्य भ्राता कपिः पश्यति।

३. रविः मुनिम् वस्त्रम् ददाति।

४. आवाम् बालकस्य सह आगच्छावः।

५. त्वम् विद्यालयेन आगच्छसि।

३) सन्धि करें

(अ) १. रमा + अत्र। २. गौरी + ईश। ३. मधु + उदक्।

४. अत्र + अस्ति। ५. नारी + अस्तु। ६. वधु + इयम्।

(ब) सन्धि विच्छेद करें

१) विद्यात्र २) यदीदम् ३) वध्वादेशः ४) गौर्यत्र ५) पित्राज्ञा

४) श्लोक का अर्थ करें

हस्तस्य भूषणम् दानम्, सत्यम् कण्ठस्य भूषणम्।
श्रोत्रस्य भूषणम् शास्त्रम्, भूषणैः किम् प्रयोजनम्॥
नरस्य आभरणम् रूपम् रूपस्य आभरणम् गुणः।
गुणस्य आभरणम् ज्ञानम् ज्ञानस्य आभरणम् क्षमा॥

५) अश्व-गज-विद्या-माला-रवि-कवि-देवी-गौरी शब्दों के रूप षष्ठी विभक्ति पर्यन्त लिखो ?

६) वर्तमानकाल में चतुर्थ गुण की क्रियाओं के रूप लिखों ?

१. नश्यति २. कुप्यति ३. नृत्यति ४. शुध्यति ५. सिध्यति

पाठ - ९

सप्तमी विभक्ति - किसी वस्तु या क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं अर्थात् जहाँ पर कोई कार्य किया जाता है अथवा कोई वस्तु रखी है या जहाँ पर या जिस दिन या जिस समय पर कार्य किया जाता है उसमें सप्तमी विभक्ति होती है।

जैसे - १. वृक्ष पर बन्दर है। २. हम सब विद्यालय में पढ़ते हैं। ३. वे दोनों रविवार को मन्दिर जाते हैं। ४. लड़का प्रातःकाल उठता है। इत्यादि वाक्यों में वृक्ष-विद्यालय-रविवार तथा प्रातःकाल आदि शब्दों में सप्तमी विभक्ति होती है।

जैसे - १. वृक्षे वानरः अस्ति। २. वयम् विद्यालये पठामः। ३. तौ रविवासरे मन्दिरं गच्छतः। ४. बालकः प्रातःकाले उत्तिष्ठति।

सप्तमी विभक्ति

देव	-	देवे	देवयोः	देवेषु
मुनि	-	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
भानु	-	भानौ	भान्वोः	भानुषु
लता	-	लतायाम्	लतयोः	लतासु
नदी	-	नद्याम्	नद्योः	नदीषु

सन्धि १३ - अ, या आ के बाद इ, ई आवे तो 'ए' हो जाता है, अ या आ के बाद उ या ऊ आवे तो ओ हो जाता है तथा अ या आ के बाद ऋ आवे तो 'अर्' हो जाता है। इसे गुण सन्धि कहते हैं।

जैसे - देव + इन्द्र = देवेन्द्र। रमा + ईश = रमेश। सूर्य + उदय = सूर्योदय। विद्या + उत्तमा =विद्योत्तमा। देव + ऋषि = देवर्षि। महा + ऋषि = महर्षि।

१४ – अ या आ के बाद ए या ऐ आवे तो दोनों के स्थान पर ऐ हो जाता है तथा अ या आ के बाद ओ या औ आवे तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है। इसे वृद्धि सन्धि कहते हैं। मम + एव = ममैव। सदा + एव = सदैव। श्रुतेन + एव = श्रुतेनैव। महा + ओषधि = महौषधि।

भूतकाल – जो कार्य हो चुका है उसे भूतकाल कहते हैं जैसे लड़का घर गया या लड़का घर जा रहा था। लता ने पुस्तक पढ़ी या लता पुस्तक पढ़ रही थी या लता पुस्तक पढ़ती थी आदि।

भूतकाल में लङ्, लुङ् और लिट् इन तीन लकारों का प्रयोग होता है। सामान्य रूप से भूतकाल में लङ् और लुङ् लकार का प्रयोग होता है किन्तु ऐतिहासिक घटनाओं के लिये लिट् लकार का प्रयोग होता है। जैसे राम ने रावण को मारा, महाभारत का युद्ध हुआ आदि।

भूतकाल (लङ् लकार) में क्रिया का रूप निम्न लिखित है।

भूतकाल (लङ् लकार)

१	२	३
अपठत्	अपठताम्	अपठन्
४	५	६
अपठः	अपठतम्	अपठत
७	८	९
अपठम्	अपठाव	अपठाम

१ १

जैसे - १. वह पढ़ रहा था या वह पढ़ता था या उसने पढ़ा=सः अपठत्

७ ७

२. मैंने पढ़ा या मैं पढ़ता था या मैं पढ़ रहा था = अहम् अपठम्

विशेष – वर्तमानकाल की क्रिया (पठति-लिखति आदि) के अन्त में 'स्म' शब्द का प्रयोग करने पर वह भूतकाल के अर्थ को बताती है। जैसे मैं

पढ़ता हूँ = अहम् पठामि। मैंने पढ़ा = अहम् पठामि स्म अथवा अहम् अपठम् दोनों ही वाक्य बन सकते हैं।

अनुवाद - छात्राः पाठशालायां पुस्तकानि अपठन्। कवी उपवने कविताम् अलिखताम्। युवां गृहात् भ्रमणाय कुत्र अगच्छतम्। मुनयः आश्रमे अवसन्। त्वम् अग्नौ किम् अक्षिपः।

श्लोक - धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे।
नारी गृहद्वारि जनाः श्मशाने॥
देहश्चितायां परलोकमार्गे।
कर्मानुगो गच्छति जीव एकः॥

सन्धि - पशवः + च। देहः + चितायाम्। कर्म + अनुगः + गच्छति + जीवः एकः।

अर्थ - मनुष्य का सांसारिक धन-सम्पत्ति आदि सब भूमि पर अर्थात् यहीं रह जाते हैं। पशु गोशाला में बन्धे रह जाते हैं, पत्नी घर के दरवाजे तक साथ देती है। मित्र-बन्धु-बान्धवादि सभी श्मशान पर्यन्त साथ आते हैं। शरीर चिता तक शेष रहता है। परलोक के मार्ग में कर्मों का अनुसरण करनेवाला जीवात्मा अकेला आ जाता है। अर्थात् जीवात्मा के साथ कोई नहीं जाता है, उसके साथ उसके किये हुए शुभ अशुभ कर्म ही साथ जाते हैं।

शब्दार्थ -
तरति = तैरता है।
दुग्धम् = दूध।
पक्ष्यति = पकायेगा।
प्रदोषः = रात्री।
उद्यमः = परिश्रम।
मृगः = हिरण।
त्रैलोक्ये = तीन लोक में।

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें।

१) अनुवाद करें।

१. विद्यालय में लड़के और लड़कियां पढ़ते हैं। पढ़ते थे। पढ़ेगें।
२. रमा के घर पर शोभा भोजन पकाती है। पकाती थी। पकायेगी।
३. नदी के पानी में मनुष्य तैर रहे हैं। तैर रहे थे। तैरेंगे।
४. गुरुजी के लिये प्रातःकाल शिष्य दूध लाता है। लाता था। लायेगा।
५. रविवार को हम सब संस्कृत पढ़ने के लिये गुरुकुल जाते हैं। जाते थे। जायेंगे।

२) सन्धि करें

अ) १. नास्ति + ईश्वरः।
२. क्रीडा + उत्सवः।
३. मधु + उष्णम्।
४. शीत + ऋतु।
५. तव + एतत्।

आ) सन्धि विच्छेद करें।

१. परोपकारः
२. देवालयः
३. वसन्तर्तुः
४. मुनिरागच्छति
५. गौरीशः

३) वेद-विद्या-माला-कवि-रवि-देवी-गौरी आदि शब्दों का सप्तमी विभक्ति पर्यन्त अभ्यास करें।

४) श्लोक का अर्थ करें।

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥१॥
प्रदोषे दीपक चन्द्रः प्रभाते दीपकः रविः।
त्रैलोक्ये दीपको धर्म सुपुत्रः कुलदीपकः ॥२॥

५) भूतकाल (लङ्लकार) में निम्नलिखित क्रियाओं के रूप लिखो ?

१. लिख् २. वद् ३. हस् ४. पच्
५. (कुप्) कुप्य ६. (नश्) नश्य ७. (नृत्) नृत्य ८. (दृश्) पश्य
९. (गम्) गच्छ १०. (नी) नय

पाठ - १०

सम्बोधन- जिसको सम्बोधित किया जाता है अथवा जिस शब्द से पहले हे या भो आदि शब्दों का प्रयोग होता है। उसमें सम्बोधन अथवा अष्टमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

जैसे -

हे राम ! वह कहाँ जाता है ? हे रमा ! तुम क्या पढ़ती हो ?
हे राम ! सः कुत्र गच्छति ? हे रमे ! त्वम् किम् पठसि ?

सम्बोधन (अष्टमी विभक्ति)

देव	-	हे देव	हे देवौ	हे देवाः
वन	-	हे वन	हे वने	हे वनानि
मुनि	-	हे मुने	हे मुनी	हे मुनयः
भानु	-	हे भानो	हे भानू	हे भानवः
लता	-	हे लते	हे लते	हे लताः
नदी	-	हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

अनुवाद - हे बालक ! त्वं नद्यां कदा तरसि ? हे बालिके ! त्वम् अधुना पाकशालायां भोजनं अपचः।

हे देवि ! नद्याः जले बालकाः अतरन्। भो छात्राः। यूयम् वायुयानेन अत्र कदा आगच्छत। हे गुरो ! भवान् शिष्यैः सह आश्रमात् नगरं कदा आगमिष्यति।

स्वर सन्धि १५ - ए, ओ, ऐ, औ के बाद कोई भी स्वर आवे तो इनके स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय् और आव् आदेश होते हैं। इसे अयादि सन्धि कहते हैं।

ने + अन = नय् + अन = नयन। पो + अन = पव् + अन = पवन
नै + अक = नाय् + अक = नायक। पौ + अक = पाव् + अक =पावक

सन्धि १६ - शब्द के अन्त में ए या ओ आवे और उसके बाद 'अ' आवे तो 'अ' का पूर्वरूप हो जाता है अर्थात् अ, ए या ओ में मिल जाता है, अ के स्थान पर पूर्व रूप या अवग्रह चिह्न (ऽ) का प्रयोग होता है। इसे पूर्वरूप सन्धि कहते हैं। जैसे - नगरे + अस्मिन् = नगरेऽस्मिन्। प्रभो+अत्र = प्रभोऽत्र, अदिते + अनुमन्यस्व = अदितेऽनुमन्यस्व

सन्धि १७ - शब्द के अन्त में ए आवे और बाद में अ को छोड़कर कोई भी स्वर आवे तो 'ए' के स्थान पर 'अ' आदेश हो जाता है।

जैसे - मे + आस्ये + अस्तु = म आस्येऽस्तु

सन्धि १८ - शब्द के अन्त में दीर्घ ई, ऊ तथा ए आवे तथा वह शब्द किसी विभक्ति का द्विवचन हो तो उसमें कोई सन्धि नहीं होती है।

जैसे - १. मुनी + इच्छतः = मुनी इच्छतः
२. भानू + आगच्छतः = भानू आगच्छतः
३. माले + अत्र = माले अत्र

श्लोक -

आहारनिद्राभयमैथुनं च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषः धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः॥

सन्धि - सामान्यम् + एतत्। पशुभिः + नराणाम्। धर्मः + हि + तेषाम् + अधिकः + विशेषः।

अर्थ - आहार (भोजन) निद्रा (नींद) भय (डर) मैथुनम् (सन्तानोत्पत्ति) ये सब कार्य मनुष्यों में और पशुओं में समान है। धर्म ही मनुष्य की विशेषता है। धर्म से हीन मनुष्य पशु के समान है।

लोट् लकार - जब किसी को आज्ञा या आदेश दिया जाता है तब क्रिया में 'लोट्' लकार का प्रयोग होता है। लोट् लकार के रूप अधोलिखित है-

लोट् लकार

	१	२	३
प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
	४	५	६
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
	७	८	९
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

जैसे - तुम सब यहाँ पढ़ो = यूयम् अत्र पठत
लड़के घर जावें। = बालकाः गृहं गच्छन्तु

शब्दार्थ - उपवनम् = बगीचा।
क्रीडांगनम् = मैदान।
तरति = तैरता है।
माणिक्यम् = मौक्तिकम् मोती।
पयः पानम् = दुग्धपान।
भुजंगः = सांप

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें।

१) अनुवाद करें।

१. हम सब पुस्तकालय में पढ़ रहे थे।
२. मोर बगीचे में नाच रहे थे।
३. लड़के मैदान में खेल रहे थे।
४. मुनि आश्रमों में रहते हैं।
५. वह नदी में तैरता है।

२) लोट् लकार के रूप लिखो।

वद् - लिख् - नृत्य् - पच् तथा हस् धातु।

३) सभी विभक्तियों में शब्द रूप लिखो।

वन-वेद-विद्या-कवि तथा देवी

४) सन्धि करें।

१.	देवः + गच्छति	२.	मुनिः + हसति
३.	देव + आलय	४.	पर + उपकार
५.	नारी + अत्र	६.	नौ + अवतु
७.	मम + एव	८.	भानुः + एति
९.	तथा + अस्तु	१०.	ने + अति

५) श्लोकों का अर्थ करो।

१. शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे।
साधवो न हि सर्वत्र चन्दनं न वने वने॥

२. उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये
पयः पानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम्॥

६) उचित शब्द का प्रयोग करे।

१) यूयं तत्र ..... (गच्छतु-गच्छत-गच्छामि)

२) वयं पुस्तकं नीत्वा ..... (अपठः-अपठताम्-अपठाम)

३) बालकाः दुग्धं पीत्वा ..... (लिख-लिखन्तु-लिखत)

४) त्वम् ..... पुस्तकं यच्छ (गुरुः-गुरुम्-गुरवे)

५) कस्य पुत्रः अत्र ..... (अपठः-अपठत्-अपठत)

पाठ - ११

व्यंजन सन्धि १९ - शब्द के अन्त में किसी भी वर्ग का पहला अक्षर आवे और उसके बाद कोई भी स्वर या किसी भी वर्ग का तीसरा चौथा अक्षर हो अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् हो तो प्रथम अक्षर को उसी वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है।

जैसे - जगत् + ईशः = जगदीशः। दिक् + अग्निः = दिगग्निः। दिक् + गजः = दिग्गजः।

सन्धि २० - शब्द के अन्त में किसी भी वर्ग का पहला अक्षर हो और उसके बाद किसी भी वर्ग का पांचवा अक्षर हो तो प्रथम अक्षर को उसी वर्ग का पांचवा अक्षर हो जाता है।

जैसे - जगत् + नाथ = जगन्नाथ। वाक् + मय = वाङ्मय। षट् + मास = षण्मास। तत् + नाम = तन्नाम।

सन्धि २१ - 'त्' के पास 'ल' आवे तो त् का ल् हो जाता है तत् + लयः = तल्लयः। तत् + लीन = तल्लीन।

विभक्तियों के लिये विशेष नियम

द्वितीया विभक्ति - १. 'बन्दर वृक्ष पर चढ़ता है' इस वाक्य में चढ़ने क्रिया का कर्म वृक्ष है इस लिये 'वृक्ष' शब्द में द्वितीया विभक्ति होती है जैसे - वानरः वृक्षम् आरोहति।

२. अभितः परितः सर्वतः (चारों ओर) उभयतः (दोनों ओर) समया - निकषा (समीप) इन शब्दों का प्रयोग होने पर इनके समीप (पहले) आनेवाले शब्द में द्वितीया विभक्ति होती है।

जैसे - १. वह वृक्ष के चारों ओर दौड़ता है, इस वाक्य में 'चारों ओर' से पहले आनेवाले वृक्ष शब्द में तथा नदी के दोनों ओर मनुष्य जा रहे हैं यहाँ

दोनों ओर से पहले आनेवाले 'नदी' शब्द में द्वितीया विभक्ति होती है। इसी प्रकार विद्यालय के पास नदी है वाक्य में 'पास' से पहले आनेवाले 'विद्यालय' शब्द में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे -

१. वह वृक्ष के चारों ओर से दौड़ रहा है = स वृक्षं परितः धावति।
२. नदी के दोनों ओर मनुष्य जा रहे हैं = नदीम् उभयतः मनुष्याः गच्छन्ति।
३. विद्यालय के पास नदी है= विद्यालयम् समया नदी अस्ति।

३. अन्तरा (बीच में) अन्तरेण, विना (बिना) हा (अफसोस) धिक् (धिक्कार) प्रति (ओर या तरफ) यावत् (पर्यन्त) उपर्युपरि (ऊपर) अधोऽधः (नीचे) आदि के शब्दों के प्रयोग होने पर भी द्वितीया विभक्ति होती है।

जैसे - १. राम और श्याम के बीच में पुस्तक है = रामं श्यामं च अन्तरा पुस्तकम् अस्ति।
२. परिश्रम के विना सुख नहीं है = परिश्रमं विना सुखं नास्ति।
३. वह आश्रम की तरफ दौड़ता है = सः आश्रमं प्रति धावति।
४. तुम नदी पर्यन्त जाते हो = त्वं नदीं यावत् गच्छसि।

अनुवाद - अलखनन्दां भागीरथीं च अन्तरा देवप्रयागः अस्ति। ग्रामं परितः जलम् अस्ति। ज्ञानम् अन्तरेण सुखं नास्ति। रामस्य गृहं समया मुनेः आश्रमः अस्ति। राज पुरुषः वनं यावत् चौरम् अनुगच्छति।

श्लोक - अर्थातुराणां न गुरु र्न बन्धुः। कामातुराणां न भयं न लज्जा॥
विद्यातुराणां न सुखं न निद्रा। क्षुधातुराणां न रुचि र्न वेला॥

सन्धि विच्छेद -

अर्थ + आतुराणाम् + न।	गुरुः + न।
काम + आतुराणाम् + न।	रुचिः + न।
विद्या + आतुराणाम् + न।	क्षुधा + आतुराणाम्।

अर्थ - अर्थ (धन) के लोभी लालची के लिये कोई गुरु या रिश्तेदार नहीं होता है। कामातुर (कामी) व्यक्ति को कोई भय और लज्जा नहीं लगती है, विद्या के लिये प्रयत्नशील व्यक्ति को न सुख की इच्छा होती है न उसे नींद

आती है और भूख से व्याकुल व्यक्ति न तो स्वाद देखता है और न समय की प्रतीक्षा कर पाता है।

मन्त्र – सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीत मस्तु मा विद्विषावहै॥
ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

मन्त्रार्थ – (नौ) हम दोनों (गुरु शिष्य) (सह) साथ साथ (अवतु) एक दूसरे की रक्षा करें।
नौ सह भुनक्तु = हम दोनों साथ साथ भोजन करें।
(सह) साथ साथ हम दोनों (वीर्यं करवावहै) पराक्रमी बनें।
(तेजस्विनौ अधीतम् अस्तु) अध्ययन करते हुए तेजस्वी बने।
(मा विद्विषावहै) आपस में कभी भी ईर्ष्या, द्वेष न करें।
ओ३म् हमारी शान्तिः (आध्यात्मिक) शान्तिः (आधिदैविक) शान्तिः (आधिभौतिक) दुःखों से निवृत्ति होवें।

शब्दार्थ –

कस्य	=	किसका
तस्य	=	उसका
अस्य	=	इसका,
यस्य	=	जिसका
तव	=	तेरा (तुम्हारा),
मम	=	मेरा,
अधीतम्	=	अध्ययन
अवतु	=	रक्षा करें
क्रीडति	=	खेलता है।
जनः, नरः, मनुष्यः	=	मनुष्य

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें।

१) अनुवाद करें।

१. नदी के दोनों ओर मनुष्य जा रहे थे।
२. आश्रम के चारों ओर इसके पशु दौड़ रहे थे।
३. विद्यालय के पास किसका घर है।
४. मुनि आश्रम की ओर जा रहे है।
५. वृक्ष के नीचे उसके बालक खेल रहे थे।

२) शुद्ध करें -

१. आश्रमस्य सर्वत: मृगा: धावन्ति।
२. नद्या: उभयत: जना गच्छन्ति।
३. गृहस्य निकषा नदी वहति।
४. त्वं गृहेण कदा आगच्छसि।
५. जनकस्य बालकस्य च अन्तरा: क: पठति।

३)

अ) सन्धि करें -

१. तौ + अपि
२. जगत् + आधार
३. सुप् + अन्त
४. दिक् + नाथ
५. नारी + अस्तु

ब) सन्धि विच्छेद करें।

१. नाववतु
२. दिगग्निरधिपतिरसित:
३. यद्यपि
४. गुर्वादेश:
५. ममापि

४) निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करें -

(१) हस्तेन (२) भोजनाय (३) नगरे (४) विद्यालयात् (५) अभित:

५) निम्नलिखित क्रियाओं के भूतकाल और भविष्यत्काल के रूप लिखों-

१. पठत:
२. गच्छथ:
३. पिबन्ति
४. वदामि
५. लिखसि

पाठ - १२

सन्धि २२ - स् या त् वर्ग के समीप 'श्' या च वर्ग आवे तो स् का श् तथा त वर्ग का च वर्ग होता है।

जैसे - सत् + चरित्र = सच्चरित्र। कस् + चन = कश्चन। बृहत् + छत्रम् = बृहच्छत्रम्। दुस् +चरित्र = दुश्चरित्र।

२३ - स् या त् वर्ग के पास ष् या ट वर्ग आवे तो स् का ष् तथा त् वर्ग का ट वर्ग हो जाता है।

जैसे - दुष् + त = दुष्ट। षष् + थ = षष्ठ। रामस् + टीकते = रामष्टीकते। उद् + डयनम् = उड्डयनम्

तृतीया विभक्ति नियम :-

१) कार्य करने के साधन में तृतीया विभक्ति होती है।
वह हाथ से लिखता है। वह आँखों से देखता है।
सः हस्तेन लिखति। सः नेत्राभ्याम् पश्यति।

२) शरीर के जिस अंग में विकार दिखाई देता है उसमें तृतीया विभक्ति होती है -
वह आंख से काणा है। सः नेत्रेण काणः अस्ति।

३) सह - साकम् - सार्धम् - समम् (साथ) तथा विना इन शब्दों का प्रयोग करने पर तृतीया विभक्ति होती है।
जैसे - परिश्रम के विना सुख नहीं मिलता है। परिश्रमेण विना सुखं न मिलति।
रमा के साथ लता जाती है। रमया सह (साकं-सार्धं-समं) लता गच्छति।

४) किसी चिह्न से अवस्था का ज्ञान होता है उसमें तृतीया विभक्ति होती है।
जैसे - जटाओं से तपस्वी लगता है। जटाभिः तापसः प्रतीयते।

५) तुल्यः - सदृशः - समः (समान) इन शब्दों का प्रयोग होने पर तृतीया या षष्ठी विभक्ति होती है।

जैसे - राम के समान - रामेण तुल्यः (सदृशः) अथवा रामस्य सदृशः।

६) कर्म वाच्य और भाववाच्य (Passive Voice) का प्रयोग होने पर कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है। राम के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है - रामेण पुस्तकं पठ्यते।

अनुवाद - सा विद्यालये हस्तेन पत्रम् अलिखत्। श्यामायाः पुत्री जलेन वस्त्राणि क्षालयति। कर्णाभ्यां बधिरः पुरुषः गृहात् कुत्र अगच्छत्। गुरुणा सह शिष्यौ आश्रमम् आगच्छताम्। कवेः पुत्रः रविः स्वभावेन पटुः अस्ति।

वा शब्द प्रयोग - १) जब एक वाक्य में दो या दो से अधिक कर्ता हो तथा वा (अथवा) से सम्बन्धित हो तो क्रिया में वचन अन्तिम कर्ता के अनुसार होता है तथा वा का प्रयोग क्रिया से पहले अथवा अन्तिम कर्ता के बाद होता है।

जैसे - राम अथवा श्याम पढ़ता है = रामः श्यामः वा पठति।
वे दोनों अथवा वे सब पढ़ रहे है = तौ ते वा पठन्ति।
वे सब अथवा वे दोनों पढ़ रहे हैं = ते तौ वा पठतः।

२) जब एक ही वाक्य में पुरुष और वचन भिन्न हो तथा 'वा' का प्रयोग हुआ हो तो क्रिया में पुरुष और वचन क्रिया से पहले आनेवाले पुरुष और वचन के अनुसार होते हैं।

जैसे - १) वह या तुम पढ़ रहे है - सः त्वं वा पठसि
२) तुम या वह पढ़ता है = त्वं स वा पठति।

श्लोक - नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

सन्धि विच्छेद - नैनं = न + एनम्। चैनं = च + एनम्। क्लेदयन्त्यापो= क्लेदयन्ति + आपः।

अर्थ - शस्त्राणि एनं न छिन्दन्ति = जीवात्मा को शस्त्र नहीं काट सकते हैं।
पावकः एनं न दहति = इसको अग्नि नहीं जला सकता है।
च आपः एनं न क्लेदयन्ति = और इसको पानी गीला नहीं कर पाता है।
मारुतः न शोषयति = वायु इसे सुखा नहीं सकता है।

शब्दार्थ -

छिन्दन्ति	=	काटते हैं।
दहति	=	जलाता है।
क्लेदयन्ति	=	गीला करते हैं।
शोषयति	=	सुखाता है।
ज्वलति	=	जलता है।
तर्जति	=	डाटता है।
शुष्यति	=	सूखता है।
उत्तिष्ठति	=	उठता है।
गर्जति	=	गरजता है।
आरोहति	=	चढ़ता है।
अवरोहति	=	उतरता है।
मेघः	=	बादल।
गगनम्	=	आकाश।
मयूरः	=	मोर।
वस्त्रम्	=	कपड़ा।

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें।

१) अनुवाद करें।

१. आज आकाश में बादल गरज रहे हैं और मोर नांच रहे हैं।
२. देवकी का भाई घर पर लता को डाटता है।
३. तुम सब पढ़ रहे हो या हंस रहे हो।
४. लड़कियों के साथ लड़के पाठशाला जा रहे थे।
५. कपड़े जल रहे हैं तथा अग्नि वस्त्रों को जला रही है।

२) अ) सन्धि करें।

१. ग्रामात् + चलितः
२. कृष्णस् + चपलः
३. षष् + थी
४. इष् + त
५. शत्रून् + जयतिः

ब) सन्धि विच्छेद करें।

१. कश्चित्
२. राष्ट्रम्
३. सच्चिदानन्द
४. उल्लेख
५. एतज्जलम्

३) शुद्ध करें।

१. रामः श्यामः वा पठतः।
२. वयम् यूयम् वा पठन्ति।
३. रामः श्यामः च पठति।
४. स नेत्रम् काणः अस्ति।
५. जनकस्य सह बालिका गच्छति।

४) श्लोक का अर्थ करें।

विदेशेषु धनं विद्या, व्यसनेषु धनं मतिः।
परलोके धनं धर्मः शीलं सर्वत्र वै धनम्।

५) उचित शब्द का प्रयोग करें -

१. बालकः ..... सह गृहं गच्छति। (जनकम्-जनकस्य-जनकेन)
२. ..... समया आश्रमः अस्ति। (नदी-नदीम्-नद्याः)
३. ..... सदृशः रमेशः नास्ति। (देव-देवेन-देवाय)
४. श्यामः ..... गृहे पुत्रं तर्जति। (कविः-कविम्-कवेः)
५. बालकः ..... बधिरः अस्ति। (कर्णौ-कर्णाभ्याम्-कर्णयोः)

पाठ - १३

सन्धि २४ - शब्द के मध्य में 'म्' या 'न्' आवे और उसके बाद किसी भी वर्ग का १-२-३-४ था अक्षर अथवा श, ष, स, ह, हो तो म् और न् का अनुस्वार हो जाता है।

जैसे - आक्रम् + स्यते = आक्रंस्यते। पयान् + सि = पयांसि। यशान् + सि = यशांसि।

२५ - शब्द के मध्य में अनुस्वार हो और उसके बाद किसी भी वर्ग का कोई भी अक्षर हो तो अनुस्वार का उसके आगे आनेवाले वर्ण के वर्ग का पांचवा अक्षर हो जाता है।

जैसे - गं + गा = गङ्गा। सं + जय = सञ्जय। कुं + ठित = कुण्ठित। सं + निधि = सन्निधि। कं + पित = कम्पित

२६ - शब्द के अन्त में 'न्' आवे और न् से पहले ह्रस्व स्वर हो और 'न्' के बाद कोई भी स्वर हो तो 'न्' के साथ एक 'न्' और आ जाता है। अर्थात् एक 'न्' के स्थान पर दो 'न्न्' का प्रयोग होता है।

जीवन् + एव = जीवन्नेव। तस्मिन् (त्+अ+स्+इ+न्) + अपि = तस्मिन्नपि।

चतुर्थी विभक्ति - जिसको कोई वस्तु देते हैं उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है जैसे -

१. राजा ब्राह्मण को गाय देता है = नृपः ब्राह्मणाय धेनुं ददाति

२. कुप्यति-क्रुध्यति (गुस्सा करता), असूयति (निन्दा करता है), ईर्ष्यति (ईर्ष्या करता है) इन क्रियाओं का प्रयोग करने पर जिस पर गुस्सा करते हैं या जिसकी निन्दा करते हैं या जिससे ईर्ष्या करते हैं उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।

पिता पुत्र पर गुस्सा करता है = पिता पुत्राय कुप्यति अथवा क्रुध्यति।

माला शीला से ईर्ष्या करती है = माला शीलायै ईर्ष्यति।

मोहन सोहन की निन्दा करता है = मोहनः सोहनाय असूयति।

३. रोचते (अच्छा लगता है), स्पृहयति (इच्छा करता है), उपदिशति (उपदेश देता है), इत्यादि क्रियाओं का प्रयोग करने पर चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे -

लड़के को लड्डु अच्छा लगता है = बालकाय मोदकं रोचते। वह मुक्ति की इच्छा करता है = स मुक्तये स्पृहयति। गुरु शिष्यों को उपदेश देता है = गुरुः शिष्येभ्यः उपदिशति।

४. नमः - स्वस्ति - स्वाहा स्वधा आदि शब्दों का प्रयोग होने पर समीप के शब्द में चतुर्थी विभक्ति होती है। नमः शिवाय। प्रजाभ्यः स्वस्तिः। अग्नये स्वाहा। पितृभ्यः स्वधा।

त्वा प्रत्यय का प्रयोग - १) जब कोई व्यक्ति एक कार्य करके दूसरा कार्य करता है अथवा जाकर-खाकर-पढ़कर इत्यादि क्रियाओं का प्रयोग जहां होता है वहाँ क्रियाओं में 'त्वा' प्रत्यय का प्रयोग होता है।

पठित्वा - पढ़कर, हसित्वा - हंसकर, लिखित्वा - लिखकर आदि।

जैसे - वह पढ़कर जाता है - स पठित्वा गच्छति।

२) जब क्रिया से पहले उपसर्ग आवे और क्रिया के अन्त में दीर्घ स्वर आवे तो 'त्वा' के स्थान पर 'य' का प्रयोग होता है। क्रीत्वा - खरीदकर। विक्रीय - बेचकर। नीत्वा - ले जाकर। आनीय - लाकर। विहाय - छोड़कर।

३) क्रिया से पहले उपसर्ग हो और क्रिया के अन्त में व्यंजन आवे तो त्वा के स्थान पर 'य' का प्रयोग होता है। आ + गम् + य = आगम्य-आकर, उप + आस् + य = उपास्य - उपासना करके, प्र + आप् + य = प्राप्य - प्राप्त करके।

४) जब क्रिया से पहले उपसर्ग आवे और क्रिया के अन्त में ह्रस्व स्वर (अ, इ, उ, ऋ) आवे तो 'त्वा' के स्थान पर 'त्य' का प्रयोग होता है।

आ + ग + त्य = आगत्य - आकर। प्र + कृ + त्य = प्रकृत्य - करके। वि + स्मृ + त्य =विस्मृत्य - भूलकर।

त्वा	त्य	य
कृत्वा-करके।	प्रकृत्य-करके।	आहूय-बुलाकर।
घ्रात्वा-सूंघ करके।	आदृत्य-आदर करके।	विहाय-छोड़कर।
श्रुत्वा-सुनकर।	पराजित्य-हारकर।	विहस्य-हसकर।
स्नात्वा-स्नान करके।	निवृत्य-लौटकर।	प्रणम्य-प्रणाम करके
गीत्वा-गाकर।	आश्रित्य-आश्रय लेकर।	आगम्य-आकर।
सुप्त्वा-सोकर।	विस्मृत्य-भूलकर।	प्राप्य-प्राप्त करके।
पक्त्वा-पकाकर।	आगत्य-आकर।	विधाय-करके।
दृष्ट्वा-देखकर।	प्रस्तुत्य-प्रस्तुत करके।	निशम्य-सुनकर।
हत्वा-मारकर।	अनुसृत्य-अनुसरण करके।	उपदिश्य-उपदेश देकर।
दत्वा-देकर।	विचिन्त्य-विचार कर।	आदाय-लाकर।
उषित्वा-रहकर।	अधीत्य-पढ़कर।	उत्थाय-उठकर।

अनुवाद - ताः पाठशालायां पठित्वा भोजनाय गृहम् अगच्छन्। तापसः आश्रमं विहाय भ्रमणाय कुत्र गमिष्यति। कस्य जनकः अत्र आगत्य लतायै कुप्यति। विद्यालये रमायाः बालिकायै पठनं रोचते। ऋषिः मुक्तये स्पृहयति, आश्रमे गुरुः शिष्येभ्यः उपदिशति।

श्लोक - श्रुत्वा स्पृष्टवा च दृष्ट्वा च भुक्त्वा घ्रात्वा च यो नरः।
न हृष्यति न ग्लायति वा स विज्ञेयो जितेन्द्रियः ॥

सन्धि - विज्ञेयः + जित + इन्द्रियः

अर्थ - जो व्यक्ति सुनकर-स्पर्श करके-देखकर-खाकर और सूंघकर न तो प्रसन्न होता है न दुःखी होता है ऐसा व्यक्ति जितेन्द्रिय है।

शब्दार्थ - खगः - पक्षी।

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें।

१) अनुवाद करें।

१. वह घर पर कार्य करके भोजन पका रही थी।
२. तुम सब यहाँ आकर लड़कों पर क्रोध क्यों करते हो।
३. वे दोनों हंसकर पढ़ रही थी।
४. रवि पुस्तक भूलकर घर चला गया।
५. लड़के गुरुजी के बगीचे में जाकर पक्षियों को देखकर हंस रहे थे।

२) शुद्ध करें -

१. पिता पुत्रे क्रुध्यति।
२. बालिका बालकम् ईर्ष्यति।
३. रामः श्यामं पुस्तकं ददाति।
४. गणेशं नमः।
५. सोमेन स्वाहा।

३) अ) सन्धि करें।

१. कस्मिन् + अपि
२. मनान् + सि
३. शां + त
४. दिक् + नाथ
५. धावन् + अश्व

ब) सन्धि विच्छेद करे।

१. तस्मिन्नेव
२. पयांसि
३. कण्ठ
४. जगन्नाथ
५. दिगम्बर

४) उचित शब्द का प्रयोग करें।

१. रामः ..... सर्वतः क्रीडति (विद्यालय-विद्यालयम्-विद्यालये)
२. बालः ..... नमति (गुरुः-गुरुम्-गुरवे)
३. गुरुः ..... क्रुध्यति (शिष्ये-शिष्यम्-शिष्याय)
४. छात्रः पाठं ..... क्रन्दति (विस्मृत्वा-विस्मृत्य-विस्मृय)
५. वानरः ..... आरोहति (वृक्षः-वृक्षे-वृक्षम्)

५) श्लोक का अर्थ करें।

उष्ट्राणां विवाहेषु गीतं गायन्ति गर्दभाः।
परस्परं प्रशंसन्ति अहो रूपम् अहो ध्वनिः।
अर्थ - अहो-अरे (आश्चर्य कारक अव्यय)

पाठ - १४

सन्धि २७ - शब्द के अन्त में 'न्' हो और न् के बाद च, छ आवे तो 'न्' के स्थान पर 'श्' होता है तथा 'न्' के बाद ट, ठ हो तो न् के स्थान पर 'ष्' तथा 'न्' के बाद त, थ हो तो न् के स्थान पर 'स्' हो जाता है और 'न्' से पहले आने वाले स्वर में अनुस्वार हो जाता है। जैसे - कस्मिन् + चित् - कस्मिंश्चित्।

महान् + छेदः = महांश्छेदः। महान् + तरुः = महांस्तरुः। चलन् + टिट्टिभः = चलंष्टिट्टिभः।

२८) शब्द के अन्त में किसी भी वर्ग का पहला अक्षर हो और उसके बाद 'ह' आवे तो प्रथम अक्षर को उसी वर्ग का तृतीय अक्षर तथा 'ह' को उसी वर्ग का चतुर्थ अक्षर हो जाता है। जैसे -

वाक् + हरिः = वाग्घरिः। तत् + हितः = तद्धितः।
अच् + हलौ = अज्झलौ। अप् + हरणम् = अब्भरणम्।

२९) ह्रस्व स्वर के बाद 'छ' आवे तो छ से पहले च् आ जाता है। दीर्घ स्वर के बाद छ आवे तो छ से पहले च् विकल्प से होता है। अर्थात् कभी 'च्' का प्रयोग होता है और कभी नहीं होता है।

ह्रस्व स्वर - वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया। परि + छेद = परिच्छेद।

दीर्घ स्वर - लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया अथवा लक्ष्मी छाया।

३०) 'त्' के पास 'ल्' आवे तो 'त्' का 'ल्' हो जाता है। जैसे -
उत् + लेख = उल्लेख। तत् + लीन = तल्लीन।

तुमुन्-प्रत्यय का प्रयोग - पढ़ने के लिये, खाने के लिये, जाने के लिये इत्यादि अर्थों के लिये क्रिया में 'तुमुन्' प्रत्यय का प्रयोग होता है जिसका 'तुम्' शेष रहता है। जैसे - पठितुम् - पढ़ने के लिये। खादितुम् - खाने के लिये। गन्तुम् - जाने के लिये इत्यादि

इन शब्दों के रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता है। सभी पुरुष लिंग,

वचनादि से समान शब्द प्रयुक्त होते है। जैसे वह पढ़ने के लिये जाता है = स पठितुं गच्छति।

हम सब पढ़ने के लिये जाते हैं - वयं पठितुं गच्छामः।

शब्दार्थ - अर्चितुम् - पूजा के लिये। द्रष्टुम् - देखने के लिये।
सेवितुम् - सेवा के लिये। श्रोतुम् - सुनने के लिये।
हसितुम् - हसने के लिये। कर्तुम् - करने के लिये।
धावितुम् - दौड़ने के लिये। गातुम् - गाने के लिये।
क्रेतुम् - खरीदने के लिये। प्रष्टुम् - पूछने के लिये।
स्मर्तुम् - याद करने के लिये। वक्तुम् - बोलने के लिये।
स्नातुम् - स्नान करने के लिये। स्थातुम् - ठहरने के लिये।
स्तोतुम् - स्तुति करने के लिये। पक्तुम् - पकाने के लिये।

लोट् लकार - जब किसी को आदेश दिया जाय या निवेदन आदि किया जाता है तब लोट् लकार होता है। जैसे तुम सब पुस्तक पढ़ो, विद्यालय जाओ आदि।

पठ् धातु लोट् लकार का क्रिया रूप

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पु.	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पु.	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पु.	पठानि	पठाव	पठाम

तुम सब पुस्तक पढ़ो = यूयं पुस्तकं पठत। तुम यहाँ आओ = त्वम् अत्र आगच्छ।

विभक्ति पंचमी - १) जिससे अलग हटता है या हटाया जाता है उसमें पंचमी विभक्ति होती है।

जैसे - वह पाप से हटता है = स पापात् विरमति। गुरु पाप से हटाता है = गुरुः पापात् निवारयति।

२) जिससे डर लगता है उसमें तथा जिससे रक्षा की जाती है उसमें

पंचमी विभक्ति होती है। जैसे -
वह चोर से डरता है=स चौरात् बिभेति (भयं करोति) वह सांप से रक्षा करता है=स सर्पात् रक्षति।

३) जिससे पढ़ते है उसमें (अर्थात् गुरु में) पंचमी विभक्ति होती है।
वह अध्यापक से पढ़ता है = सः शिक्षकात् (अध्यापकात्) पठति।

४) जिससे कोई पैदा होता है, या जिससे कोई वस्तु निकलती या प्रकट होती है उसमें पंचमी विभक्ति होती है।

जैसे - गोबर से बिच्छु पैदा होता है = गोमयात् वृश्चिकः जायते।
हिमालय से गंगा निकलती है = हिमालयात् गंगा प्रभवति।

५) अन्य, ऋते (विना), प्रभृति (लेकर), बहिः (बाहर), पूर्वः पश्चिमः उत्तरः दक्षिणः प्राक् (पहले) इन शब्दों का प्रयोग करने पर भी पंचमी विभक्ति होती है।

जैसे - १) ज्ञान के विना सुख नहीं है = ज्ञानात् ऋते सुखं नास्ति।
२) बाल्यकाल से ही वह होशियार है = बाल्यकालात् प्रभृति सः चतुरः अस्ति।
३) ग्राम के पूर्व या पहले आश्रम है = ग्रामात् पूर्वः अथवा प्राक् आश्रमः अस्ति।

६) जब दो व्यक्तियों में से किसी एक को श्रेष्ठ बताया जाता है तब जिससे श्रेष्ठ (अच्छा) बताया जाता है उसमें पंचमी विभक्ति होती है तथा गुणवाचक शब्द में 'तर' (तरप्) प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

जैसे - राम श्याम से अधिक होशियार है = रामः श्यामात् पटुतरः अस्ति।
शोभा माला से अधिक होशियार है = शोभा मालायाः पटुतरा अस्ति।

अनुवाद - बालिकाः कथां श्रोतुम् गृहात् मन्दिरं गच्छन्तु। पाठशालायां छात्रौ गुरोः पठितुम् आगच्छताम्। यमुना कस्मात् पर्वतात् प्रभवति। जनाः नद्यां स्नातुम् अगच्छन्। रामः श्यामात् स्थूलतरः अस्ति, लता च रमायाः कृशतरा अस्ति।

श्लोक – निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु ।
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ॥
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा ।
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥

सन्धि विच्छेद – नीतिनिपुणाः + यदि । यथा + इष्टम् । अद्य + एव । मरणम् + अस्तु । युग+अन्तरे ।

अर्थ – यदि नीतिनिपुणाः (१-३) निन्दन्तु (लोट १-३) स्तुवन्तु (लोट १-३) वा = यदि नीति के विशेषज्ञ व्यक्ति निन्दा करे या प्रशंसा करे ।

लक्ष्मीः (१-१) समाविशतु (लोट १-१) यथेष्टम् गच्छतु (लोट् १-१) वा = धन प्राप्त हो अथवा जहाँ चाहे वहाँ चला जाय । अद्यैव वा युगान्तरे वा मरणमस्तु = आज ही मृत्यु हो अथवा युगों (अनेक वर्षों) के बाद मृत्यु हो ।

धीराः (१-३) न्यायात्पथः (५-१) पदं (२-१) न प्रविचलन्ति (लट् १-३) धैर्यशाली व्यक्ति न्याय के मार्ग से एक भी कदम-विचलित (इधर-उधर) नहीं होते हैं । अर्थात् किसी भी परिस्थिति में न्याय का मार्ग नहीं छोड़ते हैं ।

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें।

१) अनुवाद करें।

१. वह पूजा करने के लिये घर से मन्दिर जाती है।
२. तुम क्या देखने के लिये वहाँ जाओगे।
३. मैं गीत गाने के लिये विद्यालय गया था।
४. वह स्नान करने के लिये जा रहा है और वे दोनों कथा सुनने के लिये घर से आ रही हैं।
५. छात्र आश्रम में गुरु से वेद पढ़ते हैं।

२) शुद्ध करें -

१. पुत्रः जनकेन बिभेति।
२. गुरुः शिष्यं पापस्य निवारयति।
३. धनस्य ऋते सुखं नास्ति।
४. पर्वतेन नदी प्रभवति।
५. बालकः बाल्यकालेन प्रभृतिः स्थूलः अस्ति।

३) अ) सन्धि करें।

१. सम्राट् + हर्ष
२. शिव + छाया
३. गच्छन् + छात्रः
४. तत् + लयः
५. पठन् + तव

ब) सन्धि विच्छेद करे।

१. षड्ढलानि
२. तल्लीला
३. वणिग्घसति
४. तरुच्छाया
५. भास्वांश्चरति

४) उचित शब्द का प्रयोग करें।

१. यमुना ..... उद्भवति (पर्वतम्, पर्वतेन, पर्वतात्)
२. गुरुः शिष्यं ..... वारयति (पापम्, पापेन, पापात्, पापाय)
३. यूयम् ..... विरमथ (असत्यम्, असत्याय, असत्यात्, असत्यस्य)
४. अयम् ..... प्रभृति कृशः अस्ति (बाल्यम्, बाल्येन, बाल्यात्)
५. सा ..... द्रष्टुम् आगच्छति
(वाटिका, वाटिकाम्, वाटिकया, वाटिकायै)

५) श्लोक का अर्थ करें।

पापान्निवारयति योजयते हिताय।
गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटी करोति॥
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले।
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः॥

सन्धि - पापात् + निवारयति। सत् + मित्रम्।
शब्दार्थ - गुह्यम् - गोपनीय (कमजोरी) निगूहति - छिपाता है।

पाठ - १५

विशेषण और विशेष्य - जो किसी पदार्थ या वस्तु की विशेषता बताता है उसे विशेषण कहते हैं तथा जिसकी विशेषता बतायी जाती है उसे विशेष्य कहते है। जैसे काला घोड़ा या सफेद गाय, यहाँ पर काला और सफेद शब्द घोड़े तथा गाय की विशेषता बता रहे हैं। इसलिये इन्हें विशेषण कहते हैं और गाय तथा घोड़े को विशेष्य कहते हैं।

प्रयोग के नियम :- १) जो लिंग विभक्ति और वचन विशेष्य में होते हैं वही लिंग विभक्ति और वचन विशेषण में होते हैं।

जैसे - कृष्णः अश्वः (काला घोड़ा), कृष्णम् वस्त्रम् (काला कपड़ा), कृष्णा धेनुः (काली गाय)

१) काला घोड़ा दौड़ता है = कृष्णः अश्वः धावति।

२) वह काले घोड़ों को देखता है = सः कृष्णान् अश्वान् पश्यति।

३) दो मोटे लड़के दौड़ रहे हैं = स्थूलौ बालकौ धावतः।

२) जब एक विशेषण दो या दो से अधिक विशेष्यों की विशेषता बतलाता है तो संयुक्त (सभी) विशेष्यों के अनुसार विशेषण में वचन का प्रयोग होता है।

जैसे - राम श्याम और सोहन मोटे हैं = रामः श्यामः सोहनः च स्थूलाः सन्ति।

इस वाक्य में राम-श्याम और सोहन इन तीनों के लिये 'स्थूल' विशेषण का प्रयोग हो रहा है अतः इसमें (स्थूल) में बहुवचन का प्रयोग हुआ है।

३) यदि विशेष्य पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग में प्रयुक्त हुए हों तो विशेषण में नपुंसक लिंग का प्रयोग होता है और वचन संयुक्त (सभी) विशेष्यों के अनुसार होता है।

जैसे - वृक्ष लता और घास हरे हैं = वृक्षः लता तृणं च हरितानि सन्ति।

इस वाक्य में वृक्ष शब्द पुल्लिंग में लता स्त्रीलिंग तथा 'तृणम्' नपुंसकलिंग में है इन तीनों लिंगों का प्रयोग होने के कारण 'हरित' शब्द नपुंसकलिंग में

प्रयुक्त हुआ है किन्तु वचन में तीनों के अनुसार बहुवचन (हरितानि) का प्रयोग हुआ है।

४) यदि विशेष्य पुल्लिंग और स्त्रीलिंग हो तो विशेषण में पुल्लिंग का प्रयोग होता है तथा वचन संयुक्त (सभी) विशेष्यों के अनुसार होता है।

जैसे - राम और रमा धार्मिक हैं = रामः रमा च धार्मिकौ स्तः।

यहाँ पर रामः शब्द (पुल्लिंग) रमा शब्द (स्त्रीलिंग में) है अतः विशेषण धार्मिक शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त हुआ है तथा वचन दोनों के अनुसार द्विवचन (धार्मिकौ) में प्रयुक्त हुआ है।

विशेषण वाचक शब्द

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	नपुसक लिंग
स्थूलः (मोटा)	स्थूला	स्थूलम्
शीतलः (ठण्डा)	शीतला	शीतलम्
उष्णः (गरम)	उष्णा	उष्णम्
हरितः (हरा)	हरिता	हरितम्
पीतः (पीला)	पीता	पीतम्
कृष्णः (काला)	कृष्णा	कृष्णम्
मधुरः (मीठा)	मधुरा	मधुरम्
शोभनः (सुन्दर)	शोभना	शोभनम्
श्वेतः (सफेद)	श्वेता	श्वेतम्
कृशः (दुबला-पतला)	कृशा	कृशम्

अनुवाद - स्थूले बालिके वाटिकायां हरितान् वृक्षान् अपश्यताम्।
कृष्णौ बालकौ उष्णे जले श्वेतानि वस्त्राणि क्षालयतः।
स्थूलाः जनाः शीतले जले स्नानं कृत्वा उष्णं दुग्धं पास्यन्ति।
कृशा बालिका कृष्णाभिः बालिकाभिः सह पीतानि वस्त्राणि द्रक्ष्यति।
उष्णे दुग्धे मधुरा शर्करा अस्ति अतः त्वम् उष्णं दुग्धम् अधुना पिब।

षष्ठी विभक्ति - १) जहाँ दो व्यक्तियों या पदार्थों के सम्बन्ध का ज्ञान होता है वहाँ षष्ठी विभक्ति होती है।

राम का लड़का = रामस्य पुत्रः।

रमेश की बहिन = रमेशस्य भगिनी।

श्याम का घर = श्यामस्य गृहम्।

पुस्तक का पृष्ठ = पुस्तकस्य पृष्ठम्।

जैसे - कवि के घर पर राम का लड़का लता की बहिन और भानु के पिताजी आ रहे हैं = कवेः गृहे रामस्य पुत्रः लतायाः भगिनी भानोः जनकः च आगच्छन्ति।

२) कृते (लिये) मध्ये (बीच में) समक्षम् (सम्मुख या सामने) योग्य-उचित-उपयुक्त-अनुरूप-सदृश आदि शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है।

जैसे - धर्म के लिये=धर्मस्य कृते। राजा के सामने=नृपस्य समक्षम्। मनुष्यों के बीच में=जनानां मध्ये।

जैसे ऋषि ने धर्म के लिये प्राण त्याग दिये = ऋषिः धर्मस्य कृते प्राणान् अत्यजत्। राजा के सामने वह बोलती थी = नृपस्य समक्षं सा अवदत्। मनुष्यों के बीच में मुनि है = जनानां मध्ये मुनिः अस्ति। राम के अनुरूप वन गमन था = रामस्य योग्यम्-(अनुरूपम्-सदृशम्)वनगमनम् आसीत्।

३) दो वस्तुओं या व्यक्तियों में भिन्नता या विशेषता बतलाने के लिये उन दोनों व्यक्तियों में षष्ठी विभक्ति होती है।

जैसे - रमेश और सुरेश में यही भिन्नता है = रमेशस्य सुरेशस्य च अयम् एव भेदः अस्तिः।

क्रियाएं - संस्कृत में क्रियाओं को दस भागों में विभक्त कर रखा है जिन्हें गण कहते है। जैसा कि अष्टम पाठ में बताया जा चुका है। दशम गण की क्रियाओं में क्रिया के बाद और ति से पहले गण बोधक प्रत्यय 'अय' का प्रयोग होता है।

जैसे - चोर् (चुर्) + अय + ति - चोरयति = चोरी करता है।

चिन्त् + अय + ति - चिन्तयति = चिन्ता करता है।

तोलयति = तोलता है। पूजयति = पूजा करता है।
गणयति = गिनता है। कथयति = बोलता है।
ताडयति = पीटता है। भक्षयति = खाता है।
क्षालयति = धोता है। भूषयति = सजाता है।
रचयति = बनाता है। मार्गयति = ढूंढ़ता है।

विशेष – इन क्रियाओं के रूप वर्तमान-भूत और भविष्यकाल आदि में पठति के समान बनते हैं जैसे वर्तमान काल (पठति-चोरयति), भूतकाल (अपठत्-अचोरयत्), भविष्यत्काल (पठिष्यति-चोरयिष्यति), लोट् (पठतु-चोरयतु), विधिलिङ् (पठेत्-चोरयेत्) इत्यादि

श्लोक

उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत्॥

सन्धि - षट् + एते
अर्थ - जहाँ पर (अर्थात् जिस व्यक्ति में) उद्यम = परिश्रम, सहस, धैर्य-बुद्धि और पराक्रम ये छः गुण होते हैं वहाँ (अर्थात् उस व्यक्ति का) परमात्मा भी सहाय्यक होता है।

❋❋•❋❋

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें।

१) अनुवाद करें।

१. दुबला लड़का और मोटी लड़की पुस्तकें गिनती है।
२. गुरु के सामने छात्र पढ़ रहे थे।
३. कवियों की सभा में सुधा बोल रही थी।
४. स्थूल मनुष्य बाजार में अनाज तौल रहे थे।
५. किसकी दुबली लड़की मन्दिर में पूजा करती है।

शब्दार्थ - आपणः - बाजार। अन्नम् - अनाज।

२) शुद्ध करें -

१. स्थूला बालकः पीतः वस्त्रं क्षालयति ।
२. कृशः पुत्री श्वेतः अश्वम् पश्यति ।
३. कृष्णः बालकौ भोजनात् कृते वसतः ।
४. त्वम् श्वेता वस्त्राणि क्षालयति ।
५. नृपम् समक्षे स उष्णः जलम् पिबति ।

३) अ) सन्धि करें ।

१. महान् + छेद
२. कवी + अत्र
३. कुर्वन् + आस्ते
४. धावन् + अपतत्
५. स्व + छन्द

ब) सन्धि विच्छेद करे ।

१. भवांश्चलति
२. सुगण्णीशः
३. शान्तिरापः
४. तच्च
५. तिरश्चिराजी

४) उचित शब्द का प्रयोग करें ।

१. कस्य ..... पुत्रः पत्रिकां पठति (शोभनः, शोभना, शोभनम्)
२. सा गृहे ..... दुग्धं पिबति (उष्णः, उष्णा, उष्णम्)
३. तस्य जननी..... वस्त्राणि क्षालयति (श्वेतम्, श्वेताः, श्वेतानि)
४. गुरुः ..... मध्ये उपविशति (छात्राः, छात्राणाम्, छात्रेभ्यः)
५. उद्याने ..... वृक्षाः सन्ति (हरिताः हरितानि, हरितम्)

५) श्लोक का अर्थ करें ।

धृतिक्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

पाठ १६

तुलनात्मक विशेषण – १) जब दो व्यक्तियों या पदार्थों की तुलना की जाती है अर्थात् दो में से किसी एक व्यक्ति या पदार्थ को श्रेष्ठ (अच्छा) या बुरा बताया जाता है तब विशेषण वाचक शब्द में तरप् (तर) प्रत्यय जुड़ जाता है जैसे राम श्याम से अधिक होशियार है या शीला माला से अधिक लम्बी या पतली है जैसे पटुः (होशियार) शब्द में 'तर' (तरप्) जुड़कर पटुतरः (अधिक होशियार) शब्द बन जाता है ।

२) जब दो व्यक्तियों या पदार्थों में से किसी एक को अच्छा (श्रेष्ठ) या निकृष्ट बताया जाता है तब विशेषण में तरप् (तर) प्रत्यय का प्रयोग होता है तथा जिस व्यक्ति या पदार्थ से तुलना की जाती है अर्थात् श्रेष्ठ या निकृष्ट बताया जाता है उसमें पंचमी विभक्ति होती है। तरप् (तर) प्रत्ययान्त विशेषण वाचक शब्द में लिंग विशेष्य के अनुसार होता है।

जैसे - राम श्याम से होशियार है = रामः श्यामात् पटुतरः अस्ति।
रमा शोभा से होशियार है = रमा शोभायाः पटुतरा अस्ति।

३) जब किसी एक व्यक्ति या पदार्थ की किसी समुदाय (समूह) से तुलना की जाती है अर्थात् उसकी विशेषता (अच्छी या बुरी) बतायी जाती है तब विशेषण वाचक शब्द में तमप् (तम) प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है जैसे यह लड़का कक्षा में सबसे अधिक होशियार है = एषः बालकः कक्षायां सर्वेषां पटुतमः अस्ति। जैसे पटुः (होशियार) शब्द से पटुतमः (सबसे अधिक होशियार) शब्द बन जाता है निकृष्ट (खराब या बुरा) से निकृष्टतमः (सबसे अधिक खराब या बुरा) शब्द बन जाता है।

४) जब किसी एक व्यक्ति या पदार्थ को किसी समुदाय से विशेष बताया जाता है तब उस समुदाय में षष्ठी या सप्तमी विभक्ति का बहुवचन होता है तथा विशेषण वाचक शब्द में तमप् (तम) प्रत्यय का प्रयोग होता है तम (तमप्) प्रत्ययान्त विशेषण वाचक शब्द में लिंग विशेष्य के अनुसार होता है।

जैसे - राम सभी लड़कों में होशियार है।

१) रामः बालकानां (अथवा) बालकेषु पटुतमः अस्ति
रमा सभी लड़कियों में होशियार है।
२) रमा बालिकानां (अथवा) बालिकासु पटुतमा अस्ति।

तुलनात्मक विशेषण

पटुः (होशियार)	पटुतरः	पटुतमः
स्थूलः (मोटा)	स्थूलतरः	स्थूलतमः
कृशः (दुबला)	कृशतरः	कृशतमः
लघुः (छोटा)	लघुतरः	लघुतमः
दीर्घः (बड़ा)	दीर्घतरः	दीर्घतमः
साधुः (सज्जन)	साधुतरः	साधुतमः
शुक्लः (सफेद)	शुक्लतरः	शुक्लतमः
कृष्णः (काला)	कृष्णतरः	कृष्णतमः
उष्णः (गरम)	उष्णतरः	उष्णतमः
श्रेष्ठः (श्रेष्ठ)	श्रेष्ठतरः	श्रेष्ठतमः
धीरः (धैर्यशाली)	धीरतरः	धीरतमः

सप्तमी विभक्ति – १) किसी पदार्थ या क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं और अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है।

जैसे - चटाई पर चूहा दौड़ रहा है = **कटे** मूषकः धावति। तिलों में तैल है = **तिलेषु** तैलम् अस्ति।

२) जिस दिन या समय पर कार्य किया जाता है उसमें सप्तमी विभक्ति होती है।

जैसे - मैं रविवार को आऊंगा और सायंकाल चला जाऊंगा = अहं **रविवारे** आगमिष्यामि **सायंकाले** च गमिष्यामि।

३) जब समूह (समुदाय) में से किसी एक व्यक्ति को श्रेष्ठ बताया जाता है तब उस समूह (समुदाय) में षष्ठी या सप्तमी विभक्ति का बहुवचन होता है तथा

गुणवाचक शब्द में 'तम' (तमप्) प्रत्यय का प्रयोग होता है। जैसे - कालिदास कवियों में श्रेष्ठ है = कालिदासः **कवीनां** अथवा **कविषु** श्रेष्ठतमः अस्ति।

शोभा लड़कियों में होशियार है = शोभा **बालिकानां** अथवा **बालिकासु** पटुतमा अस्ति।

४) एक कार्य के होने पर जब दूसरा कार्य होता है तब जो कार्य पहले हो चुका है उसमें सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे - अध्यापक के आने पर छात्र चले गये = अध्यापके आगते छात्राः अगच्छन्।

५) कुशल निपुण पटु (होशियार) चतुर-शठ-धूर्त कितव (ठग) इत्यादि शब्दों के आने पर सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे - वह व्यवहार में निपुण है = सः व्यवहारे निपुणः अस्ति।

तव्य और अनीय का प्रयोग - 'चाहिये' अथवा योग्य है इत्यादि अर्थ को बतलाने के लिये क्रिया वाचक शब्द में तव्य अथवा अनीय प्रत्यय का प्रयोग होता है।

जैसे - पढ़ना चाहिये - पठितव्यम्, पढ़ने योग्य है - पठनीयम्।

१) इनका प्रयोग होने पर कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है तथा कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। तव्य और अनीय प्रत्ययान्त क्रियावाचक शब्द में लिंग और वचन कर्म के अनुसार होते हैं।

जैसे - राम को वेद पढ़ना चाहिये = रामेण वेदः पठितव्यः।
राम को पत्रिका पढ़नी चाहिये = रामेण पत्रिका पठितव्या।
राम को पुस्तकें पढ़नी चाहिये = रामेण पुस्तकानि पठितव्यानि।

२) यदि वाक्य में कर्मवाचक शब्द का प्रयोग न हुआ हो तो क्रिया में नपुंसक लिंग के एकवचन का प्रयोग होता है तथा कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है-

जैसे - राम को पढ़ना चाहिये = रामेण पठितव्यम्।
लता को वहाँ जाना चाहिये = लतया तत्र गन्तव्यम्।

मुझे पढ़ना चाहिये = मया पठितव्यम्।

तुम सबको वहाँ जाना चाहिये = युष्माभिः तत्र गन्तव्यम्।

सर्वनाम शब्दों के तृतीया विभक्ति के रूप

अस्मद् (अहम्)	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
युष्मद् (त्वम्)	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
तद् (सः) पु.	तेन	ताभ्याम्	तैः
तद् (सा) स्त्री.	तया	ताभ्याम्	ताभिः
इदम् (अयम्) पु.	अनेन	आभ्याम्	एभिः
इदम् (इयम्) स्त्री.	अनया	आभ्याम्	आभिः

तव्य	**अनीय**
कर्तव्यम् (करना चाहिये)	करणीयम् (करने योग्य है)
गन्तव्यम् (जाना चाहिये)	गमनीयम् (जाने योग्य है)
क्रेतव्यम् (खरीदना चाहिये)	क्रयणीयम् (खरीदने योग्य है)
द्रष्टव्यम् (देखना चाहिये)	दर्शनीयम् (देखने योग्य है)
श्रोतव्यम् (सुनना चाहिये)	श्रवणीयम् (सुनने योग्य है)
दातव्यम् (देना चाहिये)	दानीयम (देने योग्य है)
पक्तव्यम् (पकाना चाहिये)	पचनीयम् (पचने योग्य है)
पातव्यम् (पीना चाहिये)	पानीयम् (पीने योग्य है)
हसितव्यम् (हंसना चाहिये)	हसनीयम् (हंसने योग्य है)
पठितव्यम् (पढ़ना चाहिये)	पठनीयम् (पढ़ने योग्य है)

शब्दार्थ – भोजन = भोजनम् (नपुं)

पुस्तक = पुस्तकम् (नपुं)

उपदेश = उपदेशः (पु.)

आश्रम = आश्रमः (पु.)

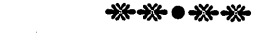

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें।

१) अनुवाद करें।

१. लड़के को घर पर पुस्तकें पढ़नी चाहिये।
२. लड़कियों को घर पर भोजन पकाना चाहिये।
३. मनुष्यों को आश्रम में उपदेश सुनना चाहिये।
४. यहाँ लड़कियों में रमा सबसे अधिक धैर्यशाली लड़की है।
५. शीला शोभा से अधिक होशियार है।

२) शुद्ध करें -

१. रामः पुस्तकं द्रष्टव्यम्।
२. लतया पत्रिकां पठितव्यम्।
३. देवः बालकेन स्थूलतरः अस्ति।
४. लता बालिकाभ्यः कृशतमा अस्ति।
५. बालकैः विद्यालये वेदान् पठितव्या।

३) उचित शब्द का प्रयोग करें।

१. देवस्य ..... पुस्तकं पठितव्यम् (पुत्रः, पुत्रम्, पुत्रेण)
२. मालायाः बालिकया ..... पठितव्या
(पत्रिका, पत्रिकाम्, पत्रिकाभिः)
३. बालकैः वेदाः ..... (पठितव्यः, पठितव्यौ, पठितव्याः)
४. रामः ..... साधुतरः अस्ति (श्यामः, श्यामाय, श्यामात्)
५. ललिता बालिकासु ..... अस्ति
(श्रेष्ठतरः, श्रेष्ठतरा, श्रेष्ठतमा)

४) अधोलिखित शब्दों के तृतीया, पंचमी और सप्तमी विभक्ति के रूप लिखें

१. देव २. माला ३. कवि ४. भानु

५) श्लोक का अर्थ करें।

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥ (मनुस्मृति)
शब्दार्थ - १) सान्वयः = परिवार सहित २) अनधीत्य = न पढ़कर

पाठ - १७

विधि लिङ् - जिससे कुछ प्रार्थना निवेदनादि किया जाता है या सुझाव दिया जाता है तब इन अर्थों को स्पष्ट करने के लिये क्रिया में विधि लिङ् का प्रयोग होता है।

जैसे - आप यहाँ बैठिये, हमको पढ़ा दीजिये, इस प्रकार के वाक्यों में विधि लिङ् का प्रयोग होता है।

विधि लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

जैसे- १) आप यहाँ पढ़ें या आपको यहाँ पढ़ना चाहिये = भवान् अत्र पठेत्।

२) तुम सब को वहाँ पढ़ना चाहिये = यूयम् तत्र पठेत।

३) आप सब संस्कृत पढ़े = भवन्तः संस्कृतं पठेयुः।

पठेत् क्रिया के समान अन्य क्रियाओं के रूप भी बनते हैं। जैसे गच्छेत् - जावे। पिबेत् - पीवे। हसेत् - हंसे। लिखेत् - लिखे। वदेत् - बोले।

क्त और क्तवतु प्रत्यय :- भूतकाल में लुङ्-लङ्-लिट् आदि लकारों का प्रयोग तो होता ही है तथा वर्तमान काल की क्रिया पठति - लिखति आदि के साथ 'स्म' शब्द का भी प्रयोग (पठति स्म. लिखति स्म) भूतकाल के लिये होता है किन्तु इनके अतिरिक्त भी अन्य प्रयोग क्रियाओं के होते हैं जिनको स्पष्ट किया जाता है कि भूतकाल में धातु (क्रिया) से क्त (त) और क्तवतु (तवत्) प्रत्यय होते हैं। क्त (त) प्रत्यय का प्रयोग क्रिया के साथ करने पर पठितः (पु.), पठिता (स्त्री), पठितम् (नपु.) आदि रूप बनते है। क्तवतु (तवत्) का प्रयोग क्रिया के साथ होने पर पुलिंग में **पठितवान्** तथा स्त्रीलिंग में **पठितवती** रूप बनते हैं।

नियम - १) क्त (त) प्रत्यय का प्रयोग होने पर कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है तथा कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। क्रिया में लिंग और वचन कर्म के अनुसार होते हैं।

राम ने वेद पढ़ा। राम ने दो वेद पढ़े। राम ने वेद पढ़े।

रामेण वेदः पठितः। रामेण वेदौ पठितौ। रामेण वेदाः पठिताः।

राम ने पत्रिका पढ़ी। राम ने दो पत्रिकाएं पढ़ी।

रामेण पत्रिका पठिता। रामेण पत्रिके पठिते।

राम ने पुस्तक पढ़ी। राम ने पुस्तकें पढ़ी।

रामेण पुस्तकं पठितं। रामेण पुस्तकानि पठितानि।

२) जब वाक्य में किसी कर्म का प्रयोग न हुआ हो तो क्रिया में नपुंसकलिंग के एकवचन का प्रयोग होता है।

जैसे - राम ने पढ़ा। लता ने पढ़ा।

रामेण पठितम्। लतया पठितम्।

क्त (त) प्रत्ययान्त क्रियाओं के पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग में रूप निम्नलिखित हैं।

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**	**नपुंसकलिंग**
पठितः (पढ़ा)	पठिता	पठितम्
खादितः (खाया)	खादिता	खादितम्
लिखितः (लिखा)	लिखिता	लिखितम्
कथितः (कहा)	कथिता	कथितम्
गतः (गया)	गता	गतम्
कृतः (किया)	कृता	कृतम्
दृष्टः (देखा)	दृष्टा	दृष्टम्
श्रुतः (सुना)	श्रुता	श्रुतम्
पीतः (पिया)	पीता	पीतम्
दत्तः (दिया)	दत्ता	दत्तम्
पक्वः (पकाया)	पक्वा	पक्वम्

अनुवाद – मुनिभिः आश्रमेषु वेदाः पठिताः । बालिकया अत्र पुस्तकानि दृष्टानि । त्वया कवेः बालिका कुत्र दत्ता । युष्माभिः वाटिकायां वानराः दृष्टाः । गुरुभिः मम गृहे भोजनं खादितम् ।

श्लोक – अधीता न कला काचित् न किंचित् कृतं तपः ।

दत्तं न किंचित् पात्रेभ्यो गतं च मधुरं वयः ॥

शब्दार्थ – अधीता-पढ़ी । केचित्-कोई । वयः-आयु ।

अर्थ – कोई कला नहीं सीखी (काचित् कला न अधीता) कुछ तप नहीं किया (किंचित् तपः न कृतम्) अच्छे लोगों को कुछ नहीं दिया (पात्रेभ्यः किंचित् न दत्तम्) सारी सुन्दर आयु व्यतीत हो गयी (मधुरं च वयः गतम्) ।

क्तवतु (तवत्) प्रत्यय – इसका प्रयोग होने पर कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है तथा कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है । क्रिया में लिंग और वचन कर्ता के अनुसार होते हैं ।

जैसे - राम ने वेद पढ़े = रामः वेदान् पठितवान् ।
दो लड़कों ने वेद पढ़े = बालकौ वेदान् पठितवन्तौ ।
लड़कों ने वेद पढ़े = बालकाः वेदान् पठितवन्तः ।
लता ने पत्रिका पढ़ी=लता पत्रिकां पठितवती ।
दो लड़कियों ने वेद पढ़े =बालिके वेदान् पठितवत्यौ ।
लड़कियों ने वेद पढ़े =बालिकाः वेदान् पठितवत्यः ।

पठितवान् के रूप **'भवान्'** शब्द की तरह तथा पठितवती शब्द के रूप **'भवती'** शब्द के समान बनते है ।

(पु.)	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः ।
(पु.)	पठितवान्	पठितवन्तौ	पठितवन्तः ।
(स्त्री.)	भवती	भवत्यौ	भवत्यः ।
(स्त्री.)	पठितवती	पठितवत्यौ	पठितवत्यः ।

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
कथितवान् (कहा)	कथितवती
खादितवान् (खाया)	खादितवती
गतवान् (गया)	गतवती
कृतवान् (किया)	कृतवती
दृष्टवान् (देखा)	दृष्टवती
श्रुतवान् (सुना)	श्रुतवती
पीतवान् (पीया)	पीतवती
दत्तवान् (दिया)	दत्तवती
लिखितवान् (लिखा)	लिखितवती

अनुवाद -

बालकः पुस्तकानि पठितवान्। बालिके उपवने मयूरान् दृष्टवत्यौ।
वयं तत्र गत्वा स्वेः गृहे भोजनं खादितवन्तः।
शोभा पुस्तकानि आनीय दुग्धं पीतवती।
कवयः पाठशालायां कार्यं कृतवन्तः। जनाः आश्रमे कथां श्रुतवन्तः।

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें।

१) अनुवाद करें।

क्त और क्तवतु दोनों प्रत्ययों का प्रयोग करके दो-दो वाक्य संस्कृत में बनावें।

१. वह पुस्तक पढ़कर विद्यालय गया।
२. तुम सबने पुस्तकें पढ़ी।
३. आप सब घर जाइये।
४. लड़कियों ने पत्रिका देखी।
५. लता यहाँ आवे।

२) शुद्ध करें।

१. रामः पत्रिका पठिता।
२. बालिकाभिः पुस्तकं पठितवान्।
३. अस्माभिः कार्यम् कृतवन्तौ।
४. कस्य बालकः चलचित्रम् (सिनेमा) दृष्टम्।
५. रमेशः अत्र भोजनं पचेत।

३) उचित शब्द का प्रयोग करें।

१. ..... पुस्तकानि पठितानि (अहम्, वयम्, मया)
२. युष्माभिः ..... पठितौ (वेदः, वेदौ, वेदाः)
३. ..... विद्यालये पठितवन्तः (बालकाः, बालिकाः, बालकः)
४. जनाः गृहं ..... (गतवान्, गतवन्तौ, गतवन्तः)
५. बालिकया ..... लिखिते (पत्रिका, पत्रिके, पत्रिकाम्)

४) श्लोक का अर्थ करें।

दिनान्ते पिबेद् दुग्धं निशान्ते च पिबेत् पयः।
भोजनान्ते पिबेत् तक्रं किं वैद्यस्य प्रयोजनम्॥
दृष्टिपूतं न्यसेत् पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत्।
सत्यपूतां वदेत् वाचं मनः पूतं समाचरेत्॥

शब्दार्थ - दिनान्ते - रात्री, निशान्ते - प्रातःकाल, पयः - पानी, तक्रम् - छाछ, न्यसेत् - रखे, समाचरेत् - आचरण करें।

५) पठ् धातु का लोट् और विधि लिङ् का रूप लिखें।

पाठ - १८

संस्कृत में लगभग दो हजार क्रियाएं हैं। इन क्रियाओं के रूप तीन प्रकार के मिलते हैं इसलिये इन को तीन भागों में विभक्त कर रखा है जिनको १) परस्मैपदी २) आत्मनेपदी और ३) उभयपदी कहते हैं।

१. **परस्मैपदी** - परस्मैपदी क्रियाओं के अन्त में ति-तः अन्ति आदि प्रत्ययों का प्रयोग होता है जिससे क्रियाओं का रूप पठति-पठतः-पठन्ति आदि होता है परस्मैपदी क्रियाओं के रूप पठति-पठतः-पठन्ति आदि के समान बनते हैं।

२. **आत्मनेपदी** - आत्मनेपदी क्रियाओं के अन्त में 'ते' एते अन्ते आदि प्रत्ययों का प्रयोग होता है। जिससे क्रियाओं के रूप लभते-लभेते-लभन्ते आदि बनते हैं। इनके समान सेवते मोदते सहते आदि क्रियाओं के रूप बनते हैं।

३. **उभयपदी** - जिन क्रियाओं के रूप परस्मैपद और आत्मने पद दोनों में बनते हैं उन्हें उभयपदी क्रिया कहते है। जैसे - पचति - पचते, यजति - यजते।

आत्मनेपदी सेव (सेवा करना) क्रिया का **वर्तमान काल** (लट् लकार) का रूप

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यम पुरुष	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तम पुरुष	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

भूतकाल (लङ् लकार)

प्रथम पुरुष	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यम पुरुष	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उत्तम पुरुष	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

भविष्यत्काल (लृट् लकार)

प्रथम पुरुष	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यम पुरुष	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उत्तम पुरुष	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

अनुवाद – संस्कृत में अनुवाद करते समय क्रिया में पुरुष और वचन का प्रयोग कर्ता के अनुसार ही होता है जैसे परस्मैपदी क्रियाओं में किया जाता है।

जैसे - १) वह गुरु की सेवा करता है = सः गुरुं सेवते
२) तुम गुरु की सेवा करते थे = त्वं गुरुम् असेवथाः
३) मैं गुरु की सेवा करूंगा = अहं गुरुं सेविष्ये।

सहते - सहन करता है। मोदते - प्रसन्न होता है। भाषते - बोलता है। कम्पते - कांपता है। आरभते - आरम्भ करता है। वन्दते - प्रणाम करता है। वर्धते - बढ़ता है। रोचते - अच्छा लगता है। याचते - मांगता है। लभते - प्राप्त करता है।

शतृ और शानच् प्रत्यय – पढ़ता हुआ, खाता हुआ, जाता हुआ इत्यादि अर्थों के लिये परस्मैपदी क्रिया से शतृ प्रत्यय और आत्मनेपदी क्रिया से शानच् प्रत्यय होता है। उभयपदी क्रियाओं से शतृ और शानच् दोनों प्रत्यय होते हैं।

प्रयोग नियम – परस्मैपदी क्रियाओं से 'शतृ' प्रत्यय होता है जिसका अत् शेष रहता है जिसका पुल्लिंग में अन् तथा स्त्रीलिंग में अन्ती रूप बनता है जिन के रूप पुल्लिंग में पठ् + अत् = पठ् + अन् - पठन् और स्त्रीलिंग में पठ् + अत् = पठ् + अन्ती = पठन्ती रूप बनता है। इसका प्रयोग विशेषण के रूप में होता है, जैसे पढ़ता हुआ बालक हंसता है या पढ़ती हुई लड़की रोती है। पठन् बालकः हसति अथवा पठन्ती बालिका क्रन्दति।

पठन्-पठन्ती आदि शतृ प्रत्ययान्त शब्दों में लिंग और वचन विशेष्य के अनुसार होते हैं।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पुलिंग	पठन्	पठन्तौ	पठन्तः
स्त्रीलिंग	पठन्ती	पठन्त्यौ	पठन्त्यः

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
गच्छन् (जाता हुआ)	गच्छन्ती (जाती हुई)
पिबन् (पीता हुआ)	पिबन्ती (पीती हुई)
खादन् (खाता हुआ)	खादन्ती (खाती हुई)
आगच्छन् (आता हुआ)	आगच्छन्ती (आती हुई)
पश्यन् (देखता हुआ)	पश्यन्ती (देखती हुई)
हसन् (हंसता हुआ)	हसन्ती (हंसती हुई)
पचन् (पकाता हुआ)	पचन्ती (पकाती हुई)

अनुवाद – हसन्तः बालकाः गच्छन्ति। हसन्त्यः बालिकाः पाठशालायाः आगच्छन्ति।

गृहे दुग्धं पिबन्तौ बालकौ, भोजनं खादन्त्यः बालिकाश्च अहसन्। कस्य पुत्री पत्रं लिखित्वा गृहं गच्छन्ती अक्रन्दत्। यूयम् आश्रमे पठन्तः गुरुम् असेवध्वम्। वयं तत्र गत्वा गुरुं वन्दामहे।

शानच् प्रत्यय – आत्मनेपदी क्रियाओं से शानच् प्रत्यय होता है जिसका 'आन' शेष रहता है तथा आन का 'मान' रूप बनता है। जैसे - सेव + शानच् = सेव + आन = सेव + मानः = सेवमानः - सेवा करता हुआ। पुलिंग में सेवमानः तथा स्त्रीलिंग में सेवमाना रूप बनते है, जिनके रूप पुलिंग देवः तथा स्त्रीलिंग माला के समान बनते है। जैसे सेवा करता हुआ लड़का रहता है = सेवमानः बालकः वसति और सेवा करती हुई लड़की पढ़ती है = सेवमाना बालिका पठति।

पुलिंग	स्त्रीलिंग
कम्पमानः (कांपता हुआ)	कम्पमाना (कांपती हुई)

सहमानः (सहन करता हुआ)	सहमाना (सहन करती हुई)
लभमानः (प्राप्त करता हुआ)	लभमाना (प्राप्त करती हुई)
याचमानः (मांगता हुआ)	याचमाना (मांगती हुई)
शयानः (सोता हुआ)	शयाना (सोती हुई)
पचमानः (पकाता हुआ)	पचमाना (पकाती हुई)

अनुवाद - गृहे कम्पमाना बालिका सेवते। भिक्षां याचमानौ भिक्षुकौ तत्र अमोदेताम्। वस्त्राणि लभमानः सेवकः अत्र मोदते। कष्टं सहमाना जननी पाकशालायां भोजनं पचति। शयानः बालकः अक्रन्दत्।

श्लोक - स्पृशन्नपि गजो हन्ति, जिघ्रन्नपि भुजंगः।
हसन्नपि नृपो हन्ति मानयन्नपि दुर्जनः॥

सन्धि - स्पृशन् + अपि, जिघ्रन् + अपि, हसन् + अपि, मानयन् + अपि यहाँ (सन्धि नियम.... से न् का आगम) नृपः और गजः के विसर्ग को ओ (सन्धि नियम..... से) हो गया।

अर्थ - गजः स्पृशन् अपि हन्ति - हाथी स्पर्श करता हुआ भी मारता है।

भुजंगः जिघ्रन् अपि हन्ति - सांप सूंघता हुआ भी मारता है।
नृपः हसन् अपि हन्ति - राजा हंसता हुआ भी मारता है।
दुर्जनः मानयन् अपि हन्ति - दुष्ट व्यक्ति सम्मान करता हुआ भी मार डालता है।

अस्मद् (मैं) और युष्मद् (तुम) शब्द के विभक्ति रूप

	अस्मद्			**युष्मद्**		
	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्रथम विभक्ति	अहम्	आवाम्	वयम्।	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	माम्	आवाम्	अस्मान्।	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः।	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्।	तुभ्यम्	युवाभ्याम	युष्मभ्यम्

पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्।	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	मम	आवयोः	अस्माकम्।	तव	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु।	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

सर्वनाम शब्द अस्मद्-युष्मद्-तद्-(सः) एतद् (एषः) इदम् (अयम्) आदि में अष्टमी विभक्ति (सम्बोधन) के रूप नहीं बनते हैं। अस्मद् और युष्मद् शब्दों के तीनों लिंगों (पु., स्त्री.,नपु.) में समान रूप ही बनते हैं।

शब्दार्थ - बन्दर - वानर :। रहता है - वसति।

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें।

१) अनुवाद करें।

१. हंसते हुए लड़के पढ़ने के लिये विद्यालय जा रहे थे।
२. पढ़ती हुई लड़कियां घर पर सेवा कर रही हैं।
३. कांपते हुए मनुष्य घर से जा रहे थे।
४. बन्दर को देखती हुई लड़कियां हंस रही थी।
५. सेवा करती हुई दो लड़कियां घर पर रहती थी।

२) शुद्ध करें।

१. हसन्तः बालकौ गच्छतः।
२. पठन् बालिकाः कम्पन्ते।
३. भोजनं पचन्ती श्यामः किं वदति।
४. गुरुं सेवमानौ छात्राः आश्रमे वसन्ति।
५. पठन् यूयम् कुत्र गच्छथ।

३) वर्तमान, भूत और भविष्यकाल में निम्नलिखित क्रियाओं के रूप लिखो।

१. मोदते २. याचते ३. रोचते ४. वन्दते ५. लभते

४) श्लोक का अर्थ करें।

अभ्यासाद् धार्यते विद्या, कुलं शीलेन धार्यते।
गुणेन ज्ञायते आर्यः कोपो नेत्रेण गम्यते॥

शब्दार्थ - धार्यते - सुरक्षित रहता है, गम्यते - जाना जाता है, ज्ञायते - जाना जाता है, कोपः=क्रोध

५) उचित शब्द का प्रयोग करें।

१. ..... बालिका सेवते (कम्पमानः, कम्पमानौ, कम्पमाना)
२. त्वम् पुस्तकं ..... गच्छसि (पठन्, पठन्तौ, पठन्त)
३. वयं गुरुं ..... पठामः (सेवमानः, सेवमानौ, सेवमानाः)
४. ..... बालिके गच्छतः (हसन्तौ, हसन्त्यौ, हसन्ती)
५. ..... सह त्वम् तत्र गच्छसि (माम्, मया, मम)

पाठ - १९

आत्मनेपदी 'सेव' धातु का आज्ञार्थक लोट् लकार तथा विधि लिङ् के निम्न लिखित रूप बनते हैं।

लोट् (आज्ञार्थक) लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यम पुरुष	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

विधि लिङ्

प्रथम पुरुष	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यम पुरुष	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

इसी प्रकार सहते - मोदते - याचते - वर्तते - भाषते - कम्पते - वर्धते - रोचते - लभते - वन्दते - आरभते आदि क्रियाओं के रूप बनते हैं।

संख्यावाचक शब्द - एक से चार तक संख्यावाचक शब्दों का प्रयोग तीनों लिंगों में विशेष्य के अनुसार होता है अर्थात् ये शब्द विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं। तीनों लिंगों में उनके भिन्न-भिन्न रूप बनते हैं। एक शब्द एकवचन में द्वि का द्विवचन तथा त्रि और चतुर् शब्द का बहुवचन में प्रयोग होता है।

	पुलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसक लिंग
१. एक	एकः (बालकः)	एका (बालिका)	एकम् (पुस्तकम्)
२. दो	द्वौ (बालकौ)	द्वे (बालिके)	द्वे (पुस्तके)
३. तीन	त्रयः (बालकाः)	तिस्रः (बालिकाः)	त्रीणि (पुस्तकानि)
४. चार	चत्वारः (बालकाः)	चतस्रः (बालिकाः)	चत्वारि (पुस्तकानि)

जैसे - एक बालक है = एकः बालकः अस्ति।
तीन लड़कियाँ हैं = तिस्रः बालिकाः सन्ति।
यहाँ दो पुस्तकें है = अत्र द्वे पुस्तके स्तः।

संख्यावाचक पंच (पांच) शब्द से लेकर अष्टादश (अठारह) पर्यन्त शब्दों के रूप बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं तथा तीनों लिंगों में समान रूप रहता है।

पंच (५), षट् (६), सप्त (७), अष्ट (८), नव (९), दश (१०), एकादश (११), द्वादश (१२), त्रयोदश (१३), चतुर्दश (१४), पंचदश (१५), षोडश (१६), सप्तदश (१७), अष्टादश (१८)

जैसे - १) पांच लड़कें जा रहे है। २) पांच लड़कियाँ आ रही हैं। ३) यहाँ पांच पुस्तकें हैं।

१. पंच बालकाः गच्छन्ति। २. पंच बालिकाः आगच्छन्ति। ३. अत्र पंच पुस्तकानि सन्ति।

एकोनविंशतिः (१९) शब्द से लेकर नवनवतिः (९९) पर्यन्त संख्यावाचक शब्दों का प्रयोग हमेशा स्त्रीलिंग में तथा एक वचन में ही होता है। विंशतिः (२०), त्रिंशत् (३०), चत्वारिंशत् (४०), पंचाशत् (५०), षष्टिः (६०), सप्ततिः (७०), अशीतिः (८०), नवतिः (९०)।

जैसे बीस मनुष्य अस्सी बन्दरों को देख रहे हैं = विंशतिः जनाः अशीतिं वानरान् पश्यन्ति। शतम् (१००), सहस्त्रम् (१०००), लक्षम् (एक लाख) इन शब्दों का प्रयोग सदा नपुंसक लिंग और एक वचन में होता है।

जैसे - सौ मनुष्य वहाँ जाते है = शतं मनुष्याः तत्र गच्छन्ति।
हजार लड़कियाँ वहाँ पढ़ती है = सहस्त्रं बालिकाः तत्र पठन्ति।
यहाँ हजार पुस्तकें हैं = अत्र सहस्त्रं पुस्तकानि सन्ति।

संख्यावाचक शब्द - एकविंशतिः (२१), द्वाविंशतिः (२२), त्रयोविंशतिः (२३), चतुर्विंशतिः (२४), पंचविंशतिः (२५), षड्विंशतिः (२६), सप्तविंशति (२७), अष्टाविंशतिः (२८), एकोनत्रिंशत् (२९), त्रिंशत् (३०), एकत्रिंशत् (३१), द्वात्रिंशत् (३२), त्रयस्त्रिंशत् (३३), चतुस्त्रिंशत् (३४), पंचत्रिंशत् (३५), षट्त्रिंशत् (३६), सप्तत्रिंशत् (३७), अष्टात्रिंशत् (३८), एकोनचत्वारिंशत् (३९), चत्वारिंशत् (४०), एकचत्वारिंशत् (४१), द्वाचत्वारिंशत् (४२), त्रिचत्वारिंशत् (४३), चतुश्चत्वारिंशत् (४४), पंचचत्वारिंशत् (४५), षट्चत्वारिंशत् (४६), सप्तचत्वारिंशत् (४७), अष्टचत्वारिंशत् (४८), एकोनपंचाशत् (४९), पंचाशत् (५०)

तद् (सः) शब्द के पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के रूप –

तद् (वह) पुल्लिंग			तद् (वह) स्त्रीलिंग		
एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**	**एक वचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
सः	तौ	ते	सा	ते	ताः
तम्	तौ	तान्	ताम्	ते	ताः
तेन	ताभ्याम्	तैः	तया	ताभ्याम्	ताभिः
तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
तस्य	तयोः	तेषाम्	तस्याः	तयोः	तासाम्
तस्मिन्	तयोः	तेषु	तस्याम्	तयोः	तासु

तद् (वह) नपुंसकलिंग

प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

शेष विभक्तियाँ पुलिंग (सः) के समान बनती हैं।

श्लोक – अनाहूतः प्रविशति अपृष्टो बहुभाषते।
अविश्वस्ते विश्वसिति मूढ़चेता नराधमः॥

सन्धि – अपृष्टः (सं. नि से विसर्ग का ओ)
मूढ़चेताः (स. नि से विसर्ग का लोप) नर+अधमः (स. नि. से)

अर्थ – १. अनाहूतः प्रविशति = बिना बुलाये जो प्रवेश करता है अर्थात् जाता है।
२. अपृष्टः बहुभाषते = बिना पूछे बहुत बोलता है।
३. अविश्वस्ते विश्वसिति = जो अविश्वसनीय पर विश्वास करता है।
४. नर अधमः मूढ़चेता = वह मनुष्य अधम (नीच) और मूढ़ अर्थात् मूर्ख है।

शब्दार्थ – कष्ट-कष्टम्। सिंह - सिंहः।

❋❋●❋❋

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें।

१) अनुवाद करें।

१. चार लड़कियाँ घर पर सेवा करें।
२. तीन मनुष्य पच्चीस बन्दरों को देख रहे थे।
३. तीन लड़कियाँ तीस सिंहों को देखकर कांप रही हैं।
४. विद्यालय में पचास छात्र पढ़ते थे।
५. आप सब यहाँ कष्ट सहन करें।

२) शुद्ध करें।

१. चतसः बालकाः पठन्ति।
२. त्रीणि बालिकाः सेवेरन्।
३. अत्र चत्वारः पुस्तकानि सन्ति।
४. त्रयः पुरुषाः विंशतिः बालकान् उपदिशन्ति।
५. त्वं किं याचन्ते।

३) उचित शब्द का प्रयोग करें।

१. यूयम् भोजनम् ..... (याचते, याचसे, याचध्वे)
२. ..... बालकौ-किं लभेते (द्वे, द्वौ, त्रयः)
३. वयं ..... पुस्तकानि याचामहे (चत्वारः, चतस्रः, चत्वारि)
४. ..... जनाः मोदेरन् (एकः, तिस्रः, त्रयः)
५. ..... पितरम् सेवामहै (भवन्तः, यूयम्, वयम्)

४) तृतीया - पंचमी - सप्तमी विभक्ति - अस्मद्, युष्मद् तथा तद् शब्द के स्त्री लिंग और पुल्लिग के रूप लिखे

५) सहते - मोदते - याचते - भाषते - लभते क्रियाओं के लोट् और विधि लिङ् के रूप लिखें।

पाठ - २०

संख्यावाचक शब्द - एकपंचाशत् (५१), द्विपंचाशत् (५२), त्रिपंचाशत् (५३), चतुःपंचाशत् (५४), पंचपंचाशत् (५५), षट्पंचाशत् (५६), सप्तपंचाशत् (५७), अष्टपंचाशत् (५८), एकोनषष्टिः (५९), षष्टिः (६०), एकषष्टिः (६१), द्विषष्टिः (६२), त्रिषष्टिः (६३), चतुःषष्टिः (६४), पंचषष्टिः (६५), षट्षष्टिः (६६), सप्तषष्टिः (६७), अष्टषष्टिः (६८), एकोनसप्ततिः (६९), सप्ततिः (७०), एकसप्ततिः (७१), द्विसप्ततिः (७२), त्रिसप्ततिः (७३), चतुःसप्ततिः (७४), पंचसप्ततिः (७५), षट्सप्ततिः (७६), सप्तसप्ततिः (७७), अष्टसप्ततिः (७८), एकोनाशीतिः (७९), अशीति (८०), एकाशीतिः (८१), द्व्यशीतिः (८२), त्र्यशीतिः (८३), चतुरशीतिः (८४), पंचाशीतिः (८५), षडशीतिः (८६), सप्ताशीतिः (८७), अष्टाशीतिः (८८), एकोननवति (८९), नवतिः (९०), एकनवति (९१), द्विनवति (९२), त्रिनवति (९३), चतुर्णवतिः (९४), पंचनवति (९५), षण्णवतिः (९६), सप्तनवतिः (९७), अष्टनवतिः (९८), नवनवतिः (९९), शतम् (१००)

यदि सौ से अधिक संख्या लिखनी हो तो पहले अधिक लिखनेवाली संख्या लिखकर उसके बाद अधिक या उत्तर शब्द लिखकर 'शतम्' (१००) शब्द लिखा जाता है।

जैसे - एक सौ पांच के लिये ''पंचाधिक (पंच+अधिक) शतम्'' या ''पंचोत्तर (पंच+उत्तर) शतम्'' लिखा जाता है। इसी प्रकार एक सौ दस के लिये 'दशाधिक (दश+अधिक) शतम्' या दशोत्तर (दश+उत्तर) शतम् शब्द का प्रयोग किया जाता है।

जैसे - विद्यालय में एक सौ पांच लड़के पढ़ते हैं।

विद्यालये पंचाधिकशतं छात्राः पठन्ति।

एक सौ पचास महिलाएं कहां जाती हैं। पंचाशदुत्तरशतं नार्यः कुत्र गच्छन्ति

क्रमबोधक संख्या - पहला (प्रथमः) दूसरा (द्वितीया) तीसरा (तृतीयः) इत्यादि अर्थों में प्रयुक्त किये जानेवाले संख्यावाचक शब्दों को क्रमबोधक

संख्या कहते हैं। इनका प्रयोग विशेषण के रूप में होता है। अर्थात् विशेष्य के अनुसार इनमें लिंग - विभक्ति वचन आदि का प्रयोग होता है।

जैसे -	पहला लड़का	पहली लड़की	पहली पुस्तक
	प्रथमः बालकः	प्रथमा बालिका	प्रथमं पुस्तकम्

	पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**	**नपुंसक लिंग**
पहला	प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
दूसरा	द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
तीसरा	तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्
चौथा	चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
पांचवा	पंचमः	पंचमी	पंचमम्
छठा	षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
सातवां	सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
आठवां	अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
नौवां	नवमः	नवमी	नवमम्
दसवां	दशमः	दशमी	दशमम्

जैसे १) दसवां लड़का कहाँ जाता है = दशमः बालकः कुत्र गच्छति ?
२) दसवी लड़की क्या करती है = दशमी बालिका किं करोति ?

समास – जब दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने से जो एक शब्द बन जाता है, उसे समास कहते है। शब्दों को मिलने पर शब्दों के बीच में आने वाली विभक्ति का लोप हो जाता है।

जैसे - कूपस्य जलम् = कूपजलम्। रामस्य पुत्रः = रामपुत्रः।

१) अव्ययीभाव २) तत्पुरुष ३) बहुव्रीहि ४) द्वन्द्व ये चार समास होते हैं। द्विगु-नञ् तथा कर्मधारय समास तत्पुरुष समास के ही भेद हैं।

१) **अव्ययीभाव समास** में पहले आनेवाला शब्द उपसर्ग या अव्यय होता है उसके अर्थ की प्रमुखता होती है।

जैसे - यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार) प्रतिदिनम् (प्रत्येक दिन)

२) **तत्पुरुष समास** में पहले आने वाले शब्द में द्वितीया-तृतीया-चतुर्थी-पंचमी-षष्ठी-सप्तमी विभक्ति आती है, जिसका लोप हो जाता है। तथा बाद में आनेवाले शब्द का अर्थ मुख्य होता है।

जैसे - कूपस्य जलम्-कूपजलम् (कुएं का पानी)

यहाँ पर षष्ठी विभक्ति का लोप हो गया है तथा जल शब्द का अर्थ मुख्य है। जैसे ''सः कूपजलं पिबति'' वाक्य में 'जल' पीता है कूप का तो केवल जल के साथ सम्बन्ध हो।

३) **बहुव्रीहि समास** में आने वाले शब्दों का अर्थ प्रमुख न होकर वे शब्द किसी अन्य अर्थ को बतलाते हैं तथा इन शब्दों की विभक्तियों का लोप हो जाता है।

जैसे - लम्बौ कर्णौ यस्य स लम्बकर्णः। (जिस व्यक्ति के लम्बे कान होते हैं उस व्यक्ति को 'लम्बकर्णः कहा जाता है।)

पीतानि अम्बराणि यस्य स-पीताम्बरः (जिस व्यक्ति के पीले कपड़े है उसे पीताम्बर कहा जाता है)

४) **द्वन्द्व समास** में सभी शब्दों के अर्थ की प्रमुखता होती है।

जैसे - रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ

रामश्च लक्ष्मणःच भरतःच = रामलक्ष्मणभरताः

५) **कर्मधारय समास** में पहला शब्द विशेषण और दूसरा विशेष्य होता है।

जैसे - कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः (काला सांप)

श्वेतः अश्वः = श्वेताश्वः (सफेद घोड़ा)

६) **द्विगु समास** में संख्यावाचक शब्द पहले आता है। जैसे - अष्टाध्यायी-सप्तर्षि

७) **नञ् समास** में पहला शब्द निषेधार्थक न आता है और उसके बाद

व्यंजन आवे तो न का अ हो जाता है, यदि न के बाद स्वर आवे तो न के स्थान पर 'अन्' हो जाता है।

जैसे - न + धर्मः = अधर्मः।

न + प्रियः = अप्रियः।

न + आदि = अन् + आदि = अनादि।

न + अन्त = अन् + अन्त = अनन्त।

इदम् (यह) शब्द पुल्लिंग-स्त्रीलिंग-नपुंसकलिंग के विभक्ति रूप

	पुल्लिंग			**स्त्रीलिंग**		
विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पंचमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु	अस्याम्	अनयोः	आसु

इदम् शब्द नपुंसकलिंग

प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि

शेष विभक्तियाँ पुलिंग (अयम्) के समान बनती है।

वर्तमान काल (लट् लकार) में कुछ क्रियाओं के रूप

१) कृ- करना। करोति-करता है।

करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति।
करोषि	कुरुथः	कुरुथ।
करोमि	कुर्वः	कुर्मः।

२) अस्-(है)

अस्ति	स्तः	सन्ति
असि	स्थः	स्थ
अस्मि	स्वः	स्मः

३) क्री=खरीदना (क्रीणाति=खरीदता है)

अनुकरोति = नकल करता है।	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
उपकारोति = उपकार करता है।	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
अधिकरोति = अधिकार करता है।	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

तिरस्करोति = अपमान करता है।
अलंकरोति = सजाता है।

वि उपसर्ग का प्रयोग करने पर विक्रीणाति (बेचता है) रूप बनता है, इसके रूप क्रीणाति के समान ही बनते है।

आविष्करोति = आविष्कार करता है।

सभी के रूप करोति के समान बनते है।

श्लोक - दानाय लक्ष्मीः सुकृताय विद्या
चिन्ता परब्रह्म - विनिश्चयाय।
परोपकाराय वचांसि यस्य
वन्द्यस्त्रिलोकीतिलकः स एव॥

सन्धि - वन्द्यः + त्रिलोकी तिलकः

अर्थ - यस्य लक्ष्मीः दानाय, विद्या सुकृताय,
चिन्ता पर ब्रह्मविनिश्चयाय।
यस्य वचांसि परोपकाराय सः एव त्रिलोकी तिलक वन्द्यः।

अर्थात् जिसका धन दान के लिये, विद्या सत्कर्म के लिये, चिन्तन परब्रह्म के निश्चय अर्थात् यथार्थ स्वरूप को जानने के लिये, जिसके वचन (वाणी-शब्द) दूसरों के कल्याण के लिये होते हैं ऐसा व्यक्ति तीनों लोकों में अर्थात् सब जगह सदा वन्दनीय अर्थात् सम्मान के योग्य होता है।

❋❋●❋❋

गृहकार्य

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखें।

१) अनुवाद करें।

१. ये दोनों लड़कियाँ कहाँ जाती हैं।
२. यह लड़का घर पर कार्य करता है।
३. इसका भाई सेवा नहीं करता है।
४. सातवा लड़का यहाँ नहीं पढ़ रहा है।
५. इस विद्यालय में एक सौ दस छात्र पढ़ते हैं।

२) शुद्ध करें।

१. इयम् अष्टमी बालकः अस्ति।
२. अयम् पंचमम् बालिका हसति।
३. गुरुः अनेन बालकाय फलं ददाति।
४. अस्यै बालिकया सह जननी गच्छति।
५. इदं जनः तान् बालिकाः पश्यति।

३) उचित शब्द का प्रयोग करें।

१. ..... बालिकायै त्वं किं यच्छसि (इयम्, इमाम् अस्मै, अस्यै)
२. त्वं ..... बालकेन सह गच्छसि (अयम्, इदम् अनेन, अस्मै)
३. भवान् ..... पुत्रीं पाठयति (द्वितीया, द्वितीयां, द्वितीयः)
४. अत्र ..... पुस्तकानि सन्ति (इमै, इमाः, इमानि)
५. ..... बालिकायाः गृहकुत्र अस्ति (इमाम्, इयम्, अस्याः)

४) द्वितीया-चतुर्थी-षष्ठी विभक्ति निम्नलिखित शब्दों की लिखें
तद् (स्त्रीलिंग), इदम् (पुलिंग)
अस्मद्-युष्मद्-माला

५) सन्धि करें -

१. अधिपतिः + अस्तिः।
२. तौ + अपि।
३. जीवन् + एव।
४. वाक् + मय।
५. नारी + अस्तु।

परिशिष्ट - १

देव-लता-वन-मुनि-भानु-नदी-अस्मद्-युष्मद्-तद्-इदम् आदि शब्द रूप २ से २० तक पाठों में आ चुके हैं तथा उनके अतिरिक्त अन्य आवश्यक शब्द रूप अधोलिखित हैं।

शब्द रूप

भवान् = आप (पुल्लिङ्ग)				भवती = आप (स्त्रीलिङ्ग)		
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः	भवती	भवत्यौः	भवत्यः
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः	भवतीम्	भवत्यौः	भवतीः
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः	भवत्या	भवतीभ्याम्	भवतीभिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः	भवत्यै	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः
पंचमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः	भवत्याः	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्	भवत्याः	भवत्योः	भवतीनाम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु	भवत्याम्	भवत्योः	भवतीषु

एतद् (यह)

(पुल्लिङ्ग)				(स्त्रीलिङ्ग)		
प्रथमा	एषः	एतौ	एते	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पंचमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

एतद् (नपुंसक लिङ्ग)

प्रथमा	एतद्	एते	एतानि
द्वितीया	एतद्	एते	एतानि

शेष विभक्तियाँ "एषः" शब्द (पुल्लिङ्ग) के समान ही बनती है।

सर्व (सब)

	(पुल्लिङ्ग)			(स्त्रीलिङ्ग)		
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
पंचमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

शेष विभक्तियाँ पुल्लिङ्ग के समान होती है।

किम् (कौन)

	(पुल्लिङ्ग)			(स्त्रीलिङ्ग)		
प्रथमा	कः	कौ	के	का	के	काः
द्वितीया	कम्	कौ	कान्	काम्	के	काः
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु	कस्याम्	कयोः	कासु

किम् = क्या (नपुंसलिङ्ग)

प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

शेष विभक्तियाँ पुल्लिङ्ग (कः शब्द) के समान होती है।

पुल्लिङ्ग	यहाँ कौन है	अत्र कः अस्ति ?
स्त्रीलिङ्ग	यहाँ कौन है	अत्र का अस्ति ?
नपुंसकलिङ्ग	यहाँ क्या है	अत्र किम् अस्ति ?

पितृ (पिता) शब्द

पिता	पितरौ	पितरः
पितरम्	पितरौ	पितॄन्
पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
पितरि	पित्रोः	पितृषु

भ्रातृ = भ्राता (भाई) तथा मातृ = (माता) शब्द के रूप भी पितृ शब्द के समान बनते हैं केवल द्वितीया विभक्ति के बहुवचन में 'मातृ' शब्द का 'मातॄः' रूप बनता है।

विशेष - शब्दरूपों की विस्तृत जानकारी के लिये रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली-सोनीपत (हरियाणा) से प्रकाशित ''शब्द रूपावली'' पढ़ें।

परिशिष्ट - २

कुछ विशेष क्रियाओं के रूप -

१. कु = करना 'लट्' (करोति = करता है)

करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
करोषि	कुरुथः	कुरुथ
करोमि	कुर्वः	कुर्मः

अनुकरोति=नकल करता है। अधिकरोति=अधिकार करता है। अपकरोति=बुराई करता है। तिरस्करोति=तिरस्कार करता है। नमस्करोति=नमस्ते करता है। उपकरोति=उपकार करता है। अलंकरोति=सजाता है। आविष्करोति=आविष्कार करता है। निराकरोति=हटाता है।

भविष्यकाल में **करिष्यति** पठिष्यति के समान रूप बनते हैं।

भूतकाल लङ् लकार

अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

अज्ञार्थक लोट् लकार

करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
कुरु	कुरुतम्	कुरुत
करवाणि	करवाव	कारवाम

विधिलिङ्

कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

२. क्री=खरीदना वर्तमानकाल 'लट्' लकार क्रीणति = खरीदता है।

क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

भविष्यकाल 'लृट्' लकार

क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

भूतकाल 'लङ्' लकार

अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

आज्ञार्थक 'लोट्' लकार

क्रीणातु	क्रीणीताम्	कीणन्तु
क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
क्रीणानि	क्रीणीव	क्रीणीम

विधिलिङ्

क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

विक्रीणाति=बेचता है। इसके रूप क्रीणति के समान बनते हैं।

'लट्' वर्तमान ग्रह=ग्रहण करना

गृह्णाति	ग्रह्णीतः	गृह्णन्ति
गृहणासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः

भूतकाल 'लङ्' लकार

अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

आज्ञार्थक 'लोट्'

गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
गृह्णानि	गृह्णीव	गृह्णीम

विधिलिङ्

गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

भविष्यत्काल में **ग्रहिष्यति** पठिष्यति के समान रूप बनेगें।

३. ज्ञा=जानता 'लट्' लकार

जानाति	जानीतः	जानन्ति
जानासि	जानीथः	जानीथ
जानामि	जानीवः	जानीमः

भविष्यत्काल 'लृट्' लकार

ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः

भूतकाल 'लङ्' लकार

अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
अजानाः	आजानीतम्	अजानीत
अजानाम्	अजानीव	अजानी

आज्ञार्थक लोट्

जानातु	जानीताम्	जानन्तु
जानीहि	जानीतम्	जानीत
जानानि	जानीव	जानीम

विधिलिङ्

जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः
जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात
जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम

अनुजानाति = आज्ञा देता है।
प्रतिजानाति = प्रतिज्ञा करता है।
अवजानाति = अनादर करता है।

४. श्रु=सुनना वर्तमानकाल 'लट्' लकार

शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
शृणोमि	शृणुवः	शृणुमः

भविष्यत्काल 'लृट्' लकार

श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

भूतकाल 'लङ्' लकार

अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
अशृणवम्	अशृणुव	अशृणुम

आज्ञार्थक 'लोट्'

शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु
शृणु	शृणुतम्	शृणुतः
शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम

विधिलिङ्

शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

५. प्राप्नोति=प्राप्त करता है वर्तमानकाल 'लट्'

प्राप्नोति	प्राप्नुतः	प्राप्नुवन्ति
प्राप्नोषि	प्राप्नुथः	प्राप्नुथ
प्राप्नोमि	प्राप्नुवः	प्राप्नुमः

भविष्यत्काल 'लट्'

प्राप्स्यति	प्राप्स्यतः	प्राप्स्यन्ति
प्राप्स्यसि	प्राप्स्यथः	प्राप्स्यथ
प्राप्स्यामि	प्राप्स्यावः	प्राप्स्यामः

भूतकाल 'लङ्'

प्राप्नोत्	प्राप्नुताम्	प्राप्नुवन्
प्राप्नोः	प्राप्नुतम्	प्राप्नुत
प्राप्नुवम्	प्राप्नुव	प्राप्नुव

आज्ञार्थक 'लोट्'

प्राप्नोतु	प्राप्नुताम्	प्राप्नुवन्तु
प्राप्नुहि	प्राप्नुतम्	प्राप्नुत
प्राप्नवानि	प्राप्नवाव	प्राप्नवाम

विधिलिङ्

प्राप्नुयात्	प्राप्नुयाताम्	प्राप्नुयुः
प्राप्नुयाः	प्राप्नुयातम्	प्राप्नुयात
प्राप्नुयाम्	प्राप्नुयाव	प्राप्नुयाम

अस्ति = है (वर्तमानकाल लट् लकार)

अस्ति	स्तः	सन्ति
असि	स्थः	स्थ
अस्मि	स्वः	स्मः

प्रयोग :-
बालकः अस्ति = लड़का है।
बालकाः सन्ति = लड़के हैं।
अहम् अस्मि = मैं हूँ।

भूतकाल 'लङ्'

आसीत्	आस्तम्	आसन्
आसीः	आस्तम्	आस्त
आसम्	आस्व	आस्म

विशेष :- क्रियाओं की विस्तृत जानकारी के लिये रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली सोनीपत (हरियाणा) द्वारा प्रकाशित। **धातुपाठ** एवं **सरलतम विधि भाग २** का अध्ययन करें।

परिशिष्ट ३

आवश्यक शब्द संग्रह

फल-वर्ग

आम	आम्रम्
जामुन	जम्बुफलम्
बेर	बदरीफलम्
शरीफा	सीताफलम्
केला	कदलीफलम्
निम्बु	निम्बुकम्
दाख	द्राक्षा
बादाम	बादामम्
खजूर	खर्जुरम्
नारंगी	नारंगम्
नारियल	नारिकेलम्
खर्बूजा	खर्बूजम्
तरबूज	कालिङ्गम्
ककडी	कर्कटी
सिंघाड़ा	श्रृंगाटकः

धान्यवर्ग

गेहूं	गोधूमः
जो	यवः
ज्वार	यावनाल
चना	चणकः
मक्का	मकायः
उड़द	माषः
सरसों	सर्षपः
बाजरा	बर्जरी
मसूर	मसूरः

यान वर्ग

गाड़ी	शकटः
रेलगाड़ी	वाष्पयानम् / विद्युत्यानम्
हवाई जहाज	वायुयानम्
पानी का जहाज	जलयानम्
मोटर	गन्त्री
साईकिल	द्विचक्रिका
मोटरसाईकिल	द्विचक्रयानम्

गृहवस्तु वर्ग

झाड़ु	मार्जनिका
चूल्हा	चुल्लिका
खूंटी	नागदन्तः
पलंग	पर्यङ्कः
खाट	खट्वा
ताला	तालकम्
ताली	कुञ्जिका
चाकु	तर्कुः
कुल्हाड़ी	कुठारः
कैंची	कर्तरिका
दीपक	दीपकम्
बत्ती	वर्तिका
शीशा	दर्पणम्
कंधा	कंकतिका
सुई	सूचिका
धागा	सूत्रम्
पंखा	व्यजनम्
छाता	छत्रम्
घड़ी	घटीयन्त्रम्
सन्दूक	मञ्जूषा
दरांती	दात्रम्

वस्त्र-वर्ग

धोती	अधोवस्त्रम्
साड़ी	शाटिका

कमीज	कञ्चुकम्
चद्दर	उत्तरीयम्
रुमाल	कर्पटः
टोपी	टोपिका
बिछौना	आस्तरणम्
तकिया	उपधानम्

शाक-वर्ग

सब्जी	शाकम्
आलू	आलुकम्
परवल	पटोलः
कोहड़ा	कूष्माण्डः
लौकी	अलाबुः(स्त्री.)
भिण्डी	कोशातकी
तरोई	महाकोशातकी
बेंगन	वृन्ताकः
करेला	कारवेल्लम्
मूली	मूलकम्
गाजर	गृञ्जनम्
गोभी	गोजिह्वा
प्याज	पलाण्डुः
लहसन	लशुनम्
बथुआ	वास्तुकम्

मसाला वर्ग

जीरा	जीरकम्
धनिया	धान्यकम्
मिर्च	मरिचम्
अद्रक	आर्द्रकम्
हल्दी	हरिद्रा
हींग	हिंगुः
सौंफ	मधुरिका
इलायची	एला
लौंग	लवङ्गम्
नमक	लवरणम्
अजवाईन	यवानी
राई	राजिका

सम्बन्ध वाचक-शब्द

पिता	जनकः, पिता
माता	जननी, माता
भाई	भ्राता
बहिन	भगिनी
दादा	पितामहः
दादी	पितामही
नाना	मातामहः
नानी	मातामही
चाचा	पितृव्यः
चाची	पितृव्यपत्नी
मामा	मातुलः
मामी	मातुलीः
भतीजा	भ्रातव्यः
भानजा	भागिनेयः
मासी	मातृष्वसा
वुपा(फुफी)	पितृष्वसा
वहनोई	भगिनीपतिः
ससुर	श्वशुरः
सास	श्वश्रूः
साला	श्यालः
देवर	देवरः
ननन्द	ननान्दा
नोकर	भृत्यः, सेवकः
सुनार	स्वर्णकारः
लुहार	लोहकारः
कुम्हार	कुम्भकारः
माली	मालाकारः
चमार	चर्मकारः
चित्र बनाने वाला	चित्रकारः
मल्लाह	नाविकः
दर्जी	सूचिकः
नाई	नापितः
शिकारी	व्याधः
बढई	तक्षकः शिल्पी
तैली	तैलकारः
जआरी	द्यतकारः

"देव भाषा-संस्कृत"

" संस्कृतं संस्कृते मूलम् "

अर्थ :- संस्कृत (देवभाषा) हमारी संस्कृति का मूल आधार है।

अमृतं मधुरं सम्यक् संस्कृतं हि ततोऽधिकम् ।
देवभोग्यमिदं यस्मात् देवभाषेति कथ्यते ॥

अर्थ :- अमृत मधुर (मीठा) होता है संस्कृत में उससे भी अधिक मधुरता होती है । देवता (श्रेष्ठजन) इसका उपयोग करते हैं इसलिये इसे देवभाषा कहते हैं।

(पाश्चात्त्य विद्वान् सर विलियम जोन्स)